समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 जुलाई 2017
वर्ष-30, अंक-01
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जून 2017

E-mail: news.shantikunj@gmail.com, news@awgp.in

2 गुरु के निर्देशों पर खरे सिद्ध होने की सच्ची साधना करें

गुरु के साँचे में ढलें, सच्चे समर्पण का अभ्यास करें, स्वयं भी साँचे बनें

नशा उन्मूलन और स्वच्छता अभियान 3

4 शिक्षा की सार्थकता समाज का हित सोचने वाले युवाओं को तैयार करने में है

आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण के प्रभावशाली परिणाम आ रहे हैं 5

भारत सरकार द्वारा गायत्री परिवार प्रतिनिध की इंडिया डेवलपमेण्ट फाउण्डेशन में नियुक्ति 7

हमारे बुजुर्ग वृक्ष हमारी धरोहर अभियान आरंभ 8

यह समय चूकने का नहीं है

इन दिनों मनुष्य का भाग्य और भविष्य नये सिरे से लिखा और गढ़ा जा रहा है। ऐसा विलक्षण समय कभी हजारों-लाखों वर्षों बाद आता है। इसे चूक जाने वाले सदा पछताते ही रहते हैं और जो उसका सदुपयोग कर लेते हैं, वे अपने आपको सदा सर्वदा के लिए अजर-अमर बना लेते हैं।

आमतौर पर भक्तजन भगवान को पुकारते और उनकी सहायता के लिए विनयपूर्वक गिड़गिड़ाते रहते हैं, पर कभी-कभी ऐसे समय भी आते हैं, जब भगवान उन भक्तजनों से आवश्यक याचना करते हैं और बदले में उन्हें इतना महत्त्व देना पड़ता है, जो उनकी अपनी महत्ता से भी बढ़-चढ़ कर होता है।

हनुमान की वरिष्ठता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने पर राम-लक्ष्मण उन्हें खोजने ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचे थे और येन-केन प्रकारेण उन्हें सीता की खोज में सहायता करने के लिए सहमत किया था। गंगाघाट पार करने के लिए केवट की सहायता आवश्यक हो गई थी, इसलिए केवट को उन्होंने आग्रहपूर्वक सहायता करने के लिए किसी प्रकार मनाया। आड़े समय में काम आने वाले जटायु को छाती से लगाकर कृतज्ञता व्यक्त की, उसकी अनुभूति हर सुनने वाले को भाव-विभोर कर देती है। समुद्र पर पुल बाँधने में जिन निहत्थे रीछ-वानरों ने सहायता की, उनकी उदार चेतना को हजारों-लाखों वर्ष बीत जाने पर भी कथाकारों ने भुलाया नहीं है।

महाभारत अभीष्ट था। उसकी बागडोर सँभालने के लिए अर्जुन जैसे मनस्वी की आवश्यकता थी। अर्जुन से पूछा गया तो वह अचकचाने लगा। कभी भीख माँग कर खा लेने की बात, तो कभी कुटुम्बियों पर हथियार न उठाने का सिद्धान्तवाद तर्क रूप में प्रस्तुत करने लगा। भगवान ने उसके मन की कमजोरी पढ़ी और भर्त्सनापूर्वक कटु शब्दों में दबाव डाला कि उसे कठोर कार्य में उद्यत होना ही चाहिए। यों भगवान सर्वशक्तिमान होने से महाभारत को अकेले भी जीत सकते थे, पर अर्जुन को श्रेय देना था, जो सच्ची मित्रता का तकाज़ा था। इसलिए संग्राम के मध्य खड़े होकर अर्जुन को सुविस्तृत दर्शनशास्त्र समझाते हुए अपने प्रयोजन में भागीदार बनने के लिए सहमत करना ही पड़ा। अर्जुन घाटे में नहीं, नफ़े में ही रहा।

अंत:करण की आवाज अनसुनी न करें

यह महान् परिवर्तन की, महाक्रांति की वेला है। इसमें कायर, लोभी, डरपोक और भाँड़ आदि जहाँ-तहाँ छिपे हों तो उनकी ओर घृणा, तिरस्कार की दृष्टि डालते हुए उन्हें अनदेखा भी किया जा सकता है। यहाँ तो प्रसंग हथियारों से सुसज्जित सेना का चल रहा है। वे ही यदि समय की महती आवश्यकता को न समझते हुए जहाँ-तहाँ मटरगश्ती करते फिरें और समय पर हथियार न उठा पाने के कारण समूची सेना को परास्त होना पड़े, तो ऐसे व्यक्तित्वों पर तो हर किसी का रोष ही बरसेगा, जिन्होंने आपात स्थिति में भी प्रमाद बरता और अपना तथा अपने देश के गौरव को मटियामेट करके रख दिया।

जीवन्तों, जाग्रतों और प्राणवानों में से प्रत्येक को अनुभव करना चाहिए कि यह ऐसा विशेष समय है जैसा कि हजारों-लाखों वर्षों बाद कभी एक बार आता है। युग परिवर्तन की वेला वह ऐतिहासिक, असाधारण अवधि है। इसमें जिनका जितना पुरुषार्थ होगा, वह उतना ही उच्चकोटि का शौर्य पदक पा सकेगा। समय निकल जाने पर, साँप निकल जाने पर लकीर को लाठियों से पीटना भर ही शेष रह जाता है।

भाग्योदय का ब्रह्ममुहूर्त

इन दिनों मनुष्य का भाग्य और भविष्य नये सिरे से लिखा और गढ़ा जा रहा है। ऐसा विलक्षण समय कभी हजारों-लाखों वर्षों बाद आता है। इसे चूक जाने वाले सदा पछताते ही रहते हैं और जो उसका सदुपयोग कर लेते हैं, वे अपने आपको सदा सर्वदा के लिए अजर-अमर बना लेते हैं।

गोवर्धन एक बार ही उठाया गया था। समुद्र पर सेतु भी एक ही बार बना था। कोई यह सोचता रहे कि ऐसे ही अवसर बार-बार आते ही रहेंगे और हमारा जब भी मन करेगा, तभी उसका लाभ ले लेंगे, तो ऐसा समझने वाले भूल ही कर रहे होंगे। इस भूल का परिमार्जन फिर कदाचित ही हो सके।

लोग अपने पुरुषार्थ से तो अपने अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करते ही रहते हैं, पर भगवान के उपायों का श्रेय मनुष्य को अनायास ही मिल जाय, ऐसा कदाचित ही कभी होता है। अर्जुन का रथ एक बार कृष्ण ने चलाया था। वे उसके केवल मात्र सारथी नहीं थे कि जब हुकुम चलाया, तभी उनसे वह काम करा लिया। भगवान राम और लक्ष्मण को कंधों पर उठाये फिरने का श्रेय हनुमान को एक ही बार मिला था। ऐसे अवसर चाहे किसी को भी कभी भी मिल जाते रहेंगे, वे हठी बनकर राम-लक्ष्मण को कंधों पर सैर कराते रहेंगे, ऐसी आशा किसी को भी नहीं करनी चाहिए।

अवांछनीयता के पलायन का, औचित्य की संस्थापना का ब्रह्ममुहूर्त यह एक बार ही आया है। फिर कभी हम लोग इसी मनुष्य जन्म में ऐसा देख सकेंगे, इसकी आशा करना एक प्रकार से अवांछनीय ही होगा। अच्छा यही हो कि ऐसी पुण्य वेला का लाभ उठाने में आज के विचारशील तो चूक करें ही नहीं।

वाङ्मय क्र.53/6.117 से संकलित, संपादित

गुरुदेव की अमानत

कर्मयोग की ओर अग्रसर करने वाला एक प्रेरक दृष्टांत

अपने गुरु समर्थ स्वामी रामदास की मस्ती और आनन्द को देखकर छत्रपति शिवाजी का भी मन हुआ कि राज्य, शासन और अन्याय परेशान करने वाले दायित्वों से छुटकारा पा लिया जाये। एक दिन जब गुरुदेव का आगमन हुआ तो शिवाजी ने उनसे कहा-''गुरुदेव! मैं राज्य के इन झंझटों से उकता गया हूँ। एक समस्या का समाधान करता हूँ तो दूसरी आ खड़ी होती है। इसलिए सोच रहा हूँ कि मैं भी अब संन्यास ग्रहण कर लूँ।''

'संन्यास! ले लो'-गुरुदेव ने बड़े सहज भाव से कहा-'इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है?'

शिवाजी पुलकित हो उठे। वे तो सोच रहे थे कि इसके लिए गुरुदेव आसानी से अनुमति नहीं देंगे और उन्हें बहुत मनाना पड़ेगा, लेकिन बात आसानी से बन गयी। उन्होंने कहा- ''तो फिर आप अपनी दृष्टि का कोई ऐसा व्यक्ति बताइये जिसे राजकाज सौंपकर मैं आत्मकल्याण की साधना करूँ और सान्निध्य में रह सकूँ।''

गुरुदेव ने कहा-''मुझे राज्य दे दे और चला जा निश्चिन्त होकर वन में।

शिवाजी उसी वेश में वे जाने को उद्यत हुए। वहाँ से निकलने और भविष्य के प्रबन्ध के लिए उन्होंने कुछ मुद्राएँ साथ लेनी चाहीं, परन्तु स्वामीजी ने यह कहा, ''अब तो तुम राज्य का दान कर चुके हो। राजकोष पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं।''

''हाँ यह ठीक है''-और शिवा रुक गये। फिर वे महल में जाने लगे तो स्वामीजी ने फिर रोका-''सुनो! महल में भी तुम नहीं जा सकते। अब जैसे हो उसी स्थिति में यहाँ से चला जाना चाहिए।''

शिवाजी उसी स्थिति में बाहर चल दिये। जाते-जाते स्वामी जी ने रोका और कहा, ''देखो! इस राज्य की सीमा में भी मत रुकना। स्मरण रहे तुम राज्य दान कर चुके हो।''

''जो आज्ञा गुरुदेव''-शिवाजी ने कहा।

जब शिवाजी चलने लगे तो स्वामीजी ने फिर रोककर पुनः पूछा-''सुनो! परन्तु भविष्य में निर्वाह की व्यवस्था कैसे करोगे?''

''जो भी हो जाये''शिवाजी बोले।

''फिर भी । कुछ तो सोचा होगा।''

''सोचा क्या? कही मेहनत-मजदूरी तो मिलेगी, किसी की नौकरी कर ही अपना गुजारा चला लूँगा।'' विरक्त हुए शिवाजी बोले।

''अच्छा तो नौकरी ही करनी है। मैं समझता हूँ कि तुम्हारे लिए मैं बढ़िया नौकरी की व्यवस्था कर सकता हूँ।''

''अच्छा कृपा होगी''-शिवाजी का उत्तर था।

''तुम यह राज्य तो मुझे दे ही चुके। अब मैं जिसे चाहूँ उसे इसकी देख-रेख और व्यवस्था के लिए नियुक्त कर सकता हूँ। अब मुझे किसी योग्य की तलाश भी करनी पड़ेगी, सो सोचता हूँ कि तुम ही इसके लिए सबसे ज्यादा योग्य हो सकते हो। इस भाव से राज्य का संचालन, दायित्व सँभालना कि तुम केवल सेवक मात्र हो। यह राज्य मेरी अमानत है, वस्तुतः तुम इसके स्वामी नहीं हो।''

गुरुदेव ने राज्य और शासन के प्रति दृष्टिकोण ही बदल दिया। वे स्वामी भाव से नहीं, सेवा भाव से शासन कार्यों को देखते रहे। जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक खर्च राजकोष से लेते और शेष को अपने गुरुदेव की अमानत मानकर प्रजा की भलाई में ही लगाते रहे। अब उन्हें राज्य शासन का कोई कार्य झंझट प्रतीत नहीं होता था।

गुरु के निर्देशों पर खरे सिद्ध होने की सच्ची साधना करें

गुरु के साँचे में ढलें, सच्चे समर्पण का अभ्यास करें, स्वयं भी साँचे बनें

पाक्षिक के गत (16 जून) अंक में गुरुपूर्णिमा के संदर्भ में गुरुगीता के संदर्भ से गुरुसत्ता की महत्ता, गुरुतत्त्व के बोध और दिव्य अनुदानों को पाने, धारण करने की पात्रता बढ़ाने के सूत्रों पर प्रकाश डाला गया था। इस अंक में पूज्य गुरुदेव के निर्देशों के अनुसार जीवन साधना करते हुए युगधर्म के बेहतर निर्वाह और आत्मकल्याण के श्रेष्ठतर लक्ष्यों को पाने के संदर्भ में चर्चा की जा रही है। पूज्य गुरुदेव के उद्धरण '**महाकाल की चेतावनी**' नामक पुस्तिका से लिए गये हैं। परिजनों से यही आशा-अपेक्षा है कि गुरुपूर्णिमा पर्व पर उभरने वाले दिव्य ऊर्जा प्रवाह का भरपूर लाभ उठाने में पूरी तत्परता बरतेंगे।

पूज्य गुरुदेव और हम

मनुष्य मात्र के अस्तित्व पर मँडरा रही विनाश की घटाओं को निरस्त करके, सभी के लिए उज्ज्वल भविष्य का सृजन करने वाली ईश्वरीय योजना '**युग निर्माण योजना**'को भूमण्डल पर प्रभावी ढंग से उतारने का महान दायित्व लेकर पूज्य गुरुदेव अवतरित हुए। इस प्रकार के प्रत्येक अवतार के साथ उनके साथ आत्मिक स्तर पर जुड़े हुए उनके साथी-सहचरों को भी योजनाबद्ध ढंग से भेजा जाता है। जो संस्कारवान आत्माएँ इस प्रकार की योजना के अन्तर्गत भूमण्डल पर आती हैं, उन्हें दुहरा श्रेय-सौभाग्य मिलता है।

1- वे अपने परम प्रिय के सान्निध्य का आनन्द उठाते हुए युगधर्म में प्रवृत्त होते हैं। यह सुख इतना बड़ा होता है जिसके लिए जीवनमुक्त आत्माएँ मोक्ष का सुख छोड़कर भी प्रसन्नता से जन्म लेने के लिए तैयार हो जाती हैं। इसके साथ ही ईश्वरीय प्रयोजन की पूर्ति में अपनी प्रतिभा लगाने के कारण उन्हें पावन पुण्य और यश की भी प्राप्ति होती है।

2- दिव्य अभियान में, दिव्यात्माओं के मार्गदर्शन में भाग लेने के कारण अन्तःकरण परिष्कार के उच्च स्तरीय लाभ सहज ही प्राप्त होने की अनोखी संभावना बन जाती है। यदि इस प्रसंग में जन्म लेने के उद्देश्य को निरन्तर ध्यान में रखा जा सके तो अनेक जन्मों तक प्रचण्ड तपस्या करने से प्राप्त होने वाले लाभ सहज क्रम में ही मिल जाते हैं।

युगऋषि के साथ जुड़ी हुई जाग्रत् आत्माओं को उक्त दोनों प्रकार के लाभ मिलने ही चाहिए। इस क्रम में जो कर्त्तव्य-उत्तरदायित्व मिलते हैं, उन्हें लौकिक कार्य न मानकर उत्कृष्ट स्तर की आत्मसाधना मानकर प्रत्येक साधक को चलना चाहिए।

मौलिक सिद्धांत समझें

युगऋषि ने स्पष्ट रूप से यह बात कही है कि अध्यात्म को वैज्ञानिक और व्यावहारिक स्तर पर स्थापित एवं प्रयुक्त करने से ही युग साधना को सफल बनाया जा सकता है। उत्कृष्ट खेल भावना विकसित करने के लिए कुछ खेलों को माध्यम बनाया जाता है। उसके लिए प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं। यदि 'खेल भावना' को परिष्कृत करने का उद्देश्य भुला दिया जाय तो खेलों के तमाम आयोजनों का क्या महत्त्व रह जायेगा? इसी तरह जीवन परिष्कार की साधना के लिए कुछ जप-तप-उपवास आदि का विधान भी बनाया जाता है। यदि उन कर्मकाण्डों के स्थूल विधि-विधानों के बीच आत्म-परिष्कार का प्रयोजन ध्यान से उतर जाय तो उन सब की क्या उपादेयता रह जायेगी? इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए गुरुवर लिखते हैं:-

यहाँ हम एक बात अवश्य कहेंगे कि आप आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धान्तों को समझिए। पूजा को पीछे हटाइए। आप यह मत सोचिए कि गुरुजी ने चौबीस-चौबीस लाख का जप किया था। नहीं, हम चौबीस लाख के जप करने वाले बहुतों का नाम बता सकते हैं जो आज बिल्कुल खाली एवं छूँछ हैं। केवल जप करने वाले कुछ नहीं कर सकते हैं, हम ब्राह्मण की शक्ति, संत की शक्ति जगाना चाहते हैं। अब तो मैं यहाँ तक कहता हूँ कि अब माला जप करें या न करें, एक माला जप करें या 81 माला जप करें, परंतु मुख्य बात यह है कि आप अपने ब्राह्मणत्व को जगाइए।

पूज्य गुरुदेव ने यह तथ्य समय-समय पर बार-बार दुहराया है कि उनकी साधना की सफलता के पीछे अनुष्ठान के कर्मकाण्डों की अपेक्षा उनकी ब्राह्मण वृत्ति का योगदान कई गुना अधिक है। वे अपने शिष्यों-सहयोगियों से भी यही उम्मीद रखते हैं कि वे कर्मकाण्ड की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठ वृत्तियों पर अधिक ध्यान दें। वे अक्सर कहा करते थे कि-

''मेरे चारों ओर जो वैभव बिखरा दिखाई देता है, इसका श्रेय हमारे अन्दर के ब्राह्मण को जाता है।''

सच है उनको दिये गये श्रद्धा-सहयोग का अधिकतम उपयोग लोकमंगल के कार्यों में ही किया जाता रहा। उनकी इस ब्राह्मणोचित प्रतिष्ठा के नाते ही इतना श्रद्धा-सहयोग उन्हें मिलता रहा कि गायत्री तपोभूमि, शान्तिकुंज से लेकर 2400 गायत्री शक्तिपीठों का निर्माण देखते-देखते हो गया। जिसके अन्दर उच्च आदर्शों के लिए सच्चे समर्पण का भाव होता है, उसे इस प्रकार के लाभ निश्चित ही मिलते हैं।

समर्पण की अवधारणा और कसौटी

समर्पण शब्द बोल देना बहुत आसान है, किन्तु उसका निर्वाह तो अपने 'मैं' को, अपनी इच्छाओं को, अपने लौकिक बड़प्पन और स्वाभिमान को विसर्जित करने से ही होता है। कामनाएँ अपनी, महत्त्वाकांक्षाएँ अपनी, और समर्पण गुरु को; यह कैसे होगा? इस संदर्भ में गुरुवर ने लिखा है:-

समर्पण का अर्थ है दो का अस्तित्व मिटाकर एक हो जाना। तुम भी अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षाओं को हमारी अनंत आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं में विलीन कर दो। जिसका अहं ज़िन्दा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया, वह देवता है। देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो। इसके लिए निरहंकारी बनो।

गुरु को समर्पण हो गया तो गुरुकार्य के लिए अपनी इच्छा, अपनी पसंद और अपनी प्रतिष्ठा आड़े नहीं आती। साधक गुरुकार्य की सफलता के लिए उन्हें सहज ही त्याग देता है। फिर गुरुकार्य के लिए संकल्पित व्यक्तियों को एकजुट होने में विशेष कठिनाई नहीं होती। समर्पण सही अर्थों में हुआ या नहीं, इसकी कसौटी वे संघबद्धता की सफलता को ही मानते हैं। लिखते हैं:-

हमारे अंतःकरण श्रद्धा एवं समर्पण के तत्वों से भरपूर हैं, इसकी कसौटी यही है कि हम अपनी संघबद्धता को और अधिक सशक्त करेंगे। आसुरी शक्तियों के मायावी जाल से बचेंगे। परस्पर दोषारोपण के स्थान पर पारस्परिक सहयोग, सौहार्द्र हमारी जीवन-नीति बनेगी। अहं की प्रतिष्ठा के स्थान पर अहं का विसर्जन, विलय हमारा जीवन-सिद्धान्त होगा। महत्वाकांक्षा का स्थान समर्पित भावनाएँ लेंगी। स्वार्थपरता, सेवा भावना में बदलेगी।

समर्थ बनें और बनायें

उस प्रकार समर्पण की कसौटी पर खरा सिद्ध होते ही लोकसेवी साधक के व्यक्तित्व का परिष्कार होने लगता है और वह अधिक महत्त्वपूर्ण-वज़नदार कार्यों का भार उठाने में सक्षम हो जाता है।

बड़े कामों के लिए बड़ी हस्तियाँ ही अभीष्ट होती हैं। इक्कीसवीं सदी के साथ एक से एक बढ़कर वज़नदार और महत्त्वपूर्ण कार्य जुड़े हैं। उन्हें सम्पन्न करने के लिए मनोबल के धनी और चरित्र बल में मूर्धन्य स्तर के व्यक्ति ही चाहिए। तलाश उन्हीं की हो रही है। प्रतिभा परिष्कार का अभियान उसी दृष्टि से चलाया जा रहा है। उस परिष्कार से तप कर निकले हुए व्यक्ति न केवल अपने अग्रगामी वरिष्ठजनों में गिने जाने योग्य बनेंगे, वरन दूसरों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने में भी अपनी विशिष्टता का परिचय दे सकेंगे।

जो स्वयं उत्कृष्ट बनने की साधना करते हैं, वे ही आगे चलकर उत्कृष्ट व्यक्तियों को गढ़ने में भी योगदान देने में समर्थ हो जाते हैं। गुरुदेव ने भी यही क्रम अपनाया और वह अपने परिजनों से भी यह अपेक्षा करते हैं :-

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्ही को चाक बनाना है। हमने तो अनगढ़ सोना-चाँदी ढेरों लाकर रख दिया। तुम्ही को साँचा बनाकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं, पर किसी के पास कार्यकर्त्ता नहीं हैं। लेबर सबके पास हैं पर समर्पित कार्यकर्त्ता, जो साँचा बनता है, वह कई को बना देता है, अपने जैसा कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाइश है कि हम अपने पीछे कार्यकर्त्ता छोड़कर जायें। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

पू. गुरुदेव यहाँ एक महत्त्वपूर्ण सत्य उद्घाटित कर रहे हैं। उन्होंने युग निर्माण परिवार में अपनी तप साधना से सोने-चाँदी जैसी उच्च आत्माओं को जोड़ दिया है। उन्हें पुर्जे-आभूषण जैसा रूप देने की जिम्मेदारी वे अपने नैष्ठिक परिजनों को सौंपना चाहते हैं। हमें यह शिकायत नहीं करनी चाहिए कि अमुक व्यक्ति उत्साही तो है, लेकिन अनगढ़ है, उसे काम कैसे सौंपें? सोचना यह चाहिए कि गुरुकृपा से सोने-चाँदी जैसे उत्साही व्यक्ति हमें मिल गये हैं। इस बेशकीमती धातु को वाञ्छित रूप देने की थोड़ी कुशलता तो हमें अर्जित करनी ही है।

आसुरी प्रवृत्तियों से बचें

गुरुवर ने एक ओर जहाँ सृजन सैनिकों की क्षमता-कुशलता बढ़ाने की बात कही है, वहीं आसुरी शक्तियों से अपनी सुरक्षा करने की विशेष सावधानी बरतने के लिए भी निर्देश दिए हैं। हम इस युग के देवासुर संग्राम के देव पक्ष के सैनिक बने हैं, इसलिए आसुरी शक्तियाँ हम पर सबसे पहले आघात करना चाहेंगी। युगऋषि स्पष्ट लिखते हैं :-

देव परिकर के सदस्यों के लिये यह आत्मावलोकन, आत्म-चिंतन एवं आत्म-मंथन का समय है। नवसृजन के ये जुझारू सैनिक, वे चाहे गायत्री तपोभूमि, शांतिकुंज एवं ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के कार्यकत्ताओं के रूप में अग्रिम पंक्ति में खड़े हों अथवा फिर अपने-अपने क्षेत्रों में नवनिर्माण के लिए जूझ रहे कर्मठ सेनानी हों। अपने परिजनों को, गायत्री परिवार के सदस्यों को यह लड़ाई अग्रिम पक्ति में खड़े होकर लड़नी पड़ रही है। यह कारण है कि असुरता के कुचक्रों, कुटिल चालों, विनाशक आघातों का सबसे पहला निशाना वही बनते हैं।

गुरुदेव के कहने का तात्पर्य यह है कि आसुरी शक्तियाँ थोड़ा-सा मौका पाते ही हमारे अंदर की आसुरी प्रवृत्तियों को उत्तेजित करेंगी ही। 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी' यह कहावत हर सृजन सैनिक को याद रखनी चाहिए। हमारे रास्ते में आसुरी तत्वों को सेंधमारी के अनेक अवसर मिलते हैं।

प्रभुकार्य तत्परता से किया तो प्रभु अनुग्रह से सफलता तो मिलेगी ही। सफलता मिलते ही स्वयं की श्रेष्ठता का अहंकार पनपने लगता है। यदि सफलता का श्रेय संयोगवश किसी और को मिल गया तो अपने मन में हीनता और ईर्ष्या के विचार उठने लगते हैं। यह दो ही मनोवृत्तियाँ सृजन सैनिकों एवं अनेक संगठनों के लिए घातक होती हैं। गुरुवर ने इसे 'माया का जादू' कहा है। लिखते हैं :-

माया के जादू से हमारा अभिमान कभी तो कुछ साधन एवं सम्मान बटोर कर शीर्ष पर जा पहुँचता है और कभी आहत होकर क्रुद्ध नाग की तरह फुँकार उठता है। गुस्से में उबलते हुए हम कहने लगते हैं। ''आखिर क्या मिला हमारी दीर्घकालीन सेवाओं के बदले में? क्या पाया हमने अपने भारी भरकम त्याग और बलिदान का पुरस्कार?'' कहते हुए भूल जाते हैं कि ''सच्चा त्यागी और बलिदानी पुरस्कार की माँग से बहुत ऊपर उठ जाता है। लेकिन अमुक को ढेर सारा सम्मान मिला और अनगिनत साधन-सुविधाएँ, मेरी योग्यता क्या किसी से कम है? क्या मेरा समर्पण उनसे थोड़ा भी कम है, सवालों को उठाते हुए क्या हम अपने ही समर्पणों का मजाक नहीं उड़ा देते?

प्रत्येक युग सैनिक को इन आसुरी आक्रमणों से स्वयं को भी बचाना है और अपने संगठन की सुरक्षा भी करनी है। उक्त प्रकार की अहंता या हीनता के भाव संगठन को विभाजित करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। हमारा संगठन लौकिक समूह मात्र नहीं है। पू. गुरुदेव ने 'अपने अंग अवयवों से' नामक पत्रक में लिखा है कि ***''आप सबकी समन्वित शक्ति का नाम ही वह व्यक्ति है जो यह पंक्तियाँ लिख रहा है।''*** इस नाते संगठन को क्षति पहुँचाना उनकी विराट काया को क्षति पहुँचाने जैसा क्रूर कृत्य ही कहा जा सकता है। उन्होंने यह बात स्पष्ट शब्दों में लिखी है :-

संगठन अपने प्रभु का विराट शरीर है, पारस्परिक सहयोग एवं सहकार ही उनकी इस विराट मूर्ति की आराधना है। तनिक आत्मावलोकरन करके देखें कि कहीं हम अपने कृत्यों से अपने प्रभु के शरीर पर आघात तो नहीं कर रहे हैं।

प्रेम के बंधन

हमारा संगठन अन्य संगठनों की तरह लौकिक नियमों से नहीं बँधा है। आत्मीयता-प्रेम के अलौकिक सूत्रों से गुरुसत्ता ने हमें बाँधा है। संगठन को व्यापक बनाने के लिए हमें भी दिव्य प्रेम की डोर को मजबूत बनाना होगा। युगऋषि कहते हैं :-

हम प्यार की रस्सी से बाँधे हुए हैं, आत्मीयता की रस्सी से बाँधे हुए हैं। ये रस्सियाँ आपको भी तैयार करनी चाहिए, ताकि आप नए आदमियों को बाँध करके अपने पास रख सकें और जो आदमी वर्तमान में हैं आपके पास, उनको मजबूती से जकड़े रह सकें। अन्यथा जो जुड़े हैं, वे भी नहीं रहेंगे। इनकी सफाई भी आपको करनी है। आत्मीयता अगर न होगी और आपका व्यक्तित्व न होगा तो आप के लिए इनकी सफाई करना भी मुश्किल हो जाएगा।

पूज्य गुरुदेव ने शक्तिपीठों की स्थापना इसलिए की थी कि वे सृजन सैनिकों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र एवं नव जागरण केन्द्र बनें। यह सब तभी संभव होता है जब वहाँ के ट्रस्टीगण एवं कार्यकर्त्तागण परस्पर स्नेह के बंधनों में बँधकर जाग्रत्, जीवन्त मशाल का रूप ले लें। गुरुपर्व के अवसर पर सभी साधकों को यह प्रयास करने चाहिए कि गुरुवर की कसौटी पर खरे सिद्ध हों। इस प्रकार लोकमंगल और आत्मकल्याण के उभय लक्ष्यों को पाने का सौभाग्य पायें।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस की हलचल

प्रदर्शनी लगाई, हस्ताक्षर अभियान चलाया

जमशेदपुर। झारखंड

गायत्री परिवार टाटानगर ने नगर के साकची गोल चक्कर पर आकर्षक प्रदर्शनी लगायी। इसमें आँकड़ों और रंग-बिरंगी चित्रावलियों के माध्यम से बताया गया था कि नशा कैसे व्यक्ति, परिवार, समाज और पूरे राष्ट्र के लिए अभिशाप बन रहा है। इस प्रदर्शनी के साथ ही एक सफल हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। इसके द्वारा लोगों से संकल्प कराये गये कि न वे स्वयं नशा करेंगे और न दूसरों को करने देंगे। हजारों लोगों ने हस्ताक्षर किये, बड़ी संख्या में युवक-युवतियों ने गायत्री परिवार के इस अभियान को गतिशील करने में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

गायत्री परिवार की वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्रीमती जसबीर कौर के मार्गदर्शन में एक प्रतिनिधि मण्डल ने जिला उपायुक्त पूर्वी सिंहभूम को प्रधानमंत्री जी के नाम एक ज्ञापन भी सौंपा जिसमें पूरे देश में नशा को प्रतिबंधित करने की माँग की गयी थी।

जनजागृति सप्ताह मनाया

उज्जैन। मध्य प्रदेश

उज्जैन शाखा ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में व्यसन मुक्ति सप्ताह मनाया। 25 से 31 मई तक क्रमशः मालनबासा, एकता नगर, बागपुरा सार्थक नगर, बालाजी परिसर, नीलगंगा में फिल्म प्रदर्शन, रैली, प्रश्नोत्तरी जैसे कार्यक्रमों से लोगों को नशा रूपी राक्षस के चंगुल से बचाने के प्रयास किये गये।

व्यसनमुक्ति सप्ताह का समापन टावर चौराहे पर बृहद् शिविर के साथ हुआ। गायत्री परिवार के युवा संगठन-दिया के साथ द इनिशियेटिव सोसायटी उज्जैन एवं सी.एच.एम.ओ. कार्यालय के स्वयंसेवकों ने भी गायत्री परिवार का बड़े उत्साह के साथ सहयोग दिया।

शिविर स्थल पर लगा एक गधे का चित्र सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा, जिस पर लिखा था, ''मैं तंबाकू नहीं खाता, फिर आप क्यों?'' वहाँ दिखाई गयी फिल्म और इस चित्र को देखकर सैकड़ों लोगों ने स्वप्रेरणा से तंबाकू आदि व्यसन छोड़ने के संकल्प लिये।

7 दिनों तक चले मोहल्ले-मोहल्ले में जनसंपर्क-जनजागरण अभियान में शामिल नवयुग के सृजेता

84 बसंत देख चुके चिकित्सक ने किया नेत्रदान और देहदान

लोकमंगल की उमंग

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश

जीवन में जिन आँखों से 84 वसंत देखे उनसे उनके मरणोपरांत किसी और को भी दुनिया देखने का अवसर मिले, यह अभिलाषा है रानीगंज, प्रतापगढ़ निवासी वयोवृद्ध डॉ. हरिनारायण श्रीवास्तव की। इसी अभिलाषा के साथ उन्होंने अपने नेत्रदान का संकल्प पत्र किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ में जाकर भरा है। उल्लेखनीय है कि वे डॉक्टर हैं, 50 वर्षों तक चिकित्सा सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं और अब नेत्रदान कर सेवा भावना का आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं। जूनियर डॉक्टरों के लाभार्थ देहदान का संकल्प भी लिया है। उनका कहना है कि मृत्यु के समय वे स्वयं ही अस्पताल जाकर भर्ती हो जायेंगे और नेत्रदान करने के बाद वहीं जीवन की आखिरी साँस लेंगे।

स्नातकोत्तर महाविद्यालय का प्रशंसनीय योगदान

ओबरा, सोनभद्र। उत्तर प्रदेश

ओबरा नगर में भव्य एवं अत्यंत प्रभावशाली व्यसनमुक्ति रैली निकाली गयी। रैली के पश्चात नगर पंचायत अध्यक्ष दुर्गावती देवी, समाजसेवी रमेश यादव एवं थानाध्यक्ष ओबरा अंजनी मिश्र की मुख्य उपस्थिति में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। दोनों ही कार्यक्रमों में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ओबरा के विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ राष्ट्र के नवनिर्माण के इस महाभियान में प्रशंसनीय योगदान दिया। छात्रसंघ के कई पदाधिकारी कार्यक्रमों में शामिल हुए।

जिला स्तरीय रैली निकाली

भिलाई, दुर्ग। मध्य प्रदेश

28 मई के दिन गायत्री शक्तिपीठ कैम्प-2 द्वारा जिला स्तरीय नशामुक्ति रैली का आयोजन किया गया। उपजोन प्रमुख श्री एस.पी. सिंह सहित विभिन्न मण्डलों से जुड़े लगभग 100 कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लेते हुए पूरे नगर को व्यसनमुक्ति का संदेश दिया। रैली के मध्य स्थान-स्थान पर दिखाये गये नुक्कड़ नाटक काफी प्रभावशाली थे।

5 जून 2017 पर्यावरण दिवस पर

कोलकाता। पश्चिम बंगाल

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रेरणाप्रद कार्यक्रम के साथ बेलूर, लिलुआ में सामूहिक वृक्षारोपण किया। अभियान संयोजक श्री रवि शर्मा के अनुसार लिलुआ पुलिस थाना के प्रभारी स्वपन साहा, अग्रसेन बालिका शिक्षा सदन की उपाचार्य, अनुसूया गांगुली, तरुण चक्रवर्ती, पवन महतो, हनी, सतीश विश्वकर्मा आदि ने बड़ी संख्या में पौधे रोपे और उनके पोषण-संरक्षण का आश्वासन दिया।

कोलकाता के लिलुआ पुलिस थाने में वृक्षारोपण करती दिया की टीम

भटगाँव, रायपुर। छत्तीसगढ़

माँ गायत्री महिला स्वयं सहायता समूह की बहिनों ने नगर पंचायत एवं कई अन्य सेवाभावी संगठनों के सहयोग से पर्यावरण दिवस पर वॉर्ड-2 सिविल लाइन्स पर सामूहिक स्वच्छता-श्रमदान का अभियान चलाया। इसके अंतर्गत बरसात का पानी तालाब में पहुँचाने के लिए नालियों का निर्माण किया गया और तालाब के चारों ओर पौधे भी लगाये गये। इस कार्य में विभिन्न प्रशासनिक अधिकारी-कर्मचारियों का प्रशंसनीय सहयोग मिला।

वैज्ञानिकों की बस्ती में सेवा-स्वच्छता की भावना जगा रहे हैं श्री हितेश जोशी

500 स्वच्छताग्रही तैयार करना है लक्ष्य

बीएआरसी, मुम्बई। महाराष्ट्र

मानव में देवत्व जगाने और धरती पर स्वर्ग बसाने के परम पूज्य गुरुदेव के सपने को साकार करने में जी-जान से जुटे दिया, मुम्बई के सदस्य श्री हितेश जोशी भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक परिवारों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। समय-समय पर अपनी कॉलोनी में स्वच्छता अभियान चलाकर लोगों को वे स्वच्छता के प्रति जागरूक कर रहे हैं। लोगों का दृष्टिकोण बदल रहा है, बड़े ही नहीं, बच्चे भी उनसे प्रेरणा पा रहे हैं।

28 मई को दिया, बीएआरसी ने नीलगिरी एसोसिएशन के साथ मिलकर सामूहिक स्वच्छता अभियान चलाया। बिल्डिंग परिसर के साथ-साथ सड़क के आसपास, पार्किंग आदि की सफाई कर 25 बैग कचरा एकत्रित किया गया।

श्री हितेश जोशी ने बताया कि बालकनी आदि से सीधे नीचे

वैज्ञानिकों के परिवार के युवा अपनी व्यसाहत की सफाई करते हुए

कचरा फैंक देना लोगों की आम आदत है। ऐसे सामूहिक श्रमदान से लोगों की आदत बदल रही है, लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। वे ऐसे सामूहिक स्वच्छता अभियान चलाते हुए '500 स्वच्छताग्रही' तैयार करना चाहते हैं। इनके माध्यम से बीएआरसी और उसके आसपास के गोवंडी, मानखुर्द, ट्रॉम्बे आदि क्षेत्रों को साफ-सुथरा, हराभरा बनाना चाहते हैं। वे अपनी धर्मपत्नी भावना के साथ शिक्षा, सेवा के भी कई अभियान चलाते हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी शारीरिक श्रम और स्वच्छता को व्यक्तित्व के समन्वित और संतुलित विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने कोचरब में अपना पहला आश्रम खोला। उसमें रहने वाले सेवादारों को 11 प्रतिज्ञाएँ करनी होती थीं। उनमें नित्य स्वच्छता-श्रमदान करना भी शामिल था।

परम पूज्य गुरुदेव ने सदैव दैनिक जीवन में स्वच्छता-श्रमदान का समावेश करने की प्रेरणा दी।

ऐसे ही महापुरुषों और आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, स्वच्छ भारत अभियान के प्रणेता माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान ने श्री हितेश जोशी को सेवा-स्वच्छता अभियान के प्रति पूरी तरह समर्पित कर दिया है।

शराबी दूल्हे की बारात लौटाने वाली साहसी युवती का गायत्री परिवार ने किया सम्मान

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

नशा जीवन के लिए अभिशाप है। नशा विरोधी अभियान चलाया जाता है, संकल्प लिये जाते हैं, लेकिन धन्य हैं वे लोग जो नशे के खिलाफ संघर्ष करने का साहस कर पाते हैं। इनमें भी कुछ काम ऐसे होते हैं जो सारे समाज के लिए प्रेरणा बन जाते हैं।

गायत्री परिवार के परिजनों ने शारदा के गाँव कोपेडीह जाकर किया उसका सम्मान

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव ने ऐसी एक साहसी युवती का सार्वजनिक तौर पर सत्कार किया, जिसने अपने भविष्य की परवाह न करते हुए शराबी दूल्हे से विवाह न करने की ठानी और अपने दरवाजे पर आयी बारात लौटा दी। शारदा नाम की यह युवती कोपेडीह गाँव के निवासी मंगलु साहू की आत्मजा है।

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री जुगल लड्ढा, नंदकिशोर सुरजन, हरीश गाँधी, ठाकुर हरिकीर्तन आदि ने कोपेडीह गाँव पहुँचकर युवती का भावभरा सम्मान किया। उसे आशीर्वाद स्वरूप गायत्री माता की दो साड़ियाँ और पुरस्कार स्वरूप 1000 रुपये भेंट किये गये। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने कहा कि ऐसा जज़्बा हर युवती में आ जाये तो समाज में एक क्रान्ति आ जाये।

जिले में वैनगंगा के छः घाटों पर चलाया स्वच्छता अभियान

जिला प्रशासन और अनेक सामाजिक संगठनों ने की भागीदारी

बालाघाट। मध्य प्रदेश

गंगा सप्तमी के दिन गायत्री परिवार द्वारा घोषित राष्ट्रीय जल स्रोत शुद्धि अभियान में जिला प्रशासन और कई अन्य सामाजिक संगठनों को साथ लेकर वैनगंगा नदी की सफाई करने में स्थानीय शाखा को शानदार सफलता मिली। गायत्री परिवार ने विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, तैराकी संघ, प्रधानमंत्री कौशल योजना सेण्टर से सम्बद्ध चंदन मल्टीपरपज़ वैलफेअर सोसायटी के कार्यकर्त्ताओं के साथ मिलकर यह सफाई अभियान चलाया।

वैनगंगा नदी पर कई विकासखंडों के कुल छः स्थान-जागपुर घाट, गर्रा पुल के पास, बजरंग घाट, खैरी घाट,

बालाघाट में वैनगंगा नदी के घाटों पर चल रहा सामूहिक स्वच्छता अभियान

छिदलई घाट, हट्टा की बावली पर सामूहिक स्वच्छता अभियान चलाया गया। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री बुद्धसिंह पारधी, सर्वशिक्षा अभियान के जिला प्रेरक श्री नोन्टीराम बोहने, बालाघाट के नगर पालिका अध्यक्ष श्री अनिल धुवारे और कलेक्टर श्री यादव भी कार्यक्रम में पहुँचे।

सफाई अभियान के बाद ग्राम अमेडा के 51 घरों में एक कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ देवस्थापानाएँ करायी गयीं।

शिक्षा की सार्थकता समाज का हित सोचने वाले युवा को तैयार करने में है

माननीय मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, भाशिमं के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.सच्चिदानंद जोशी सहित अनेक विद्वानों ने भारतीय शिक्षण मण्डल के अभ्यास वर्ग में व्यक्त किये विचार

अभ्यास वर्ग के मंच पर विराजमान डॉ. सच्चिदानन्द जोशी आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, माननीय मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत एवं प्रांतीय अध्यक्ष श्री मनोहर सिंह रावत

संस्कृत और संस्कृति का शिक्षा में समावेश हो

मुख्यमंत्री माननीय श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने वेद, उपनिषद्, गीता आदि आर्ष ग्रंथों की ओर सभा का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि इनमें निहित सूत्र भारतीय संस्कृति को मजबूत आधार स्तंभ प्रदान करते हैं, हमारी शिक्षण पद्धति में इनका समावेश किया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने बताया कि पौलेण्ड व स्पेन में संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। संस्कृत सदाचार सिखाने वाली भाषा है। देश में शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो, जिसमें विद्यार्थी अपनी संस्कृति व पूर्वजों का आदर करना सीखें।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने सृजनशील, समाजसेवी युवा गढ़ने वाले देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षण पद्धति की भी सराहना की।

अध्यात्मवादी विचारधारा अपनानी होगी

चारों ओर व्याप्त अनीति के उच्छेदन के लिए समय युवाओं को पुकार रहा है। इसके लिए उन्हें अध्यात्मवादी विचारधारा अपनानी पड़ेगी, अर्थात् संस्कृत, संस्कृति व संस्कार से परिपूर्ण विचारों वाला जीवन जीना होगा। • **आद. डॉ. प्रणव पण्ड्या जी**

आज देश को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो व्यक्तिगत संकीर्णताओं से उठकर समाज और राष्ट्र के हित में सोचते हों। शिक्षण पद्धति में व्यापक परिवर्तन से ही ऐसे सद्गुणी सेवाभावी, संस्कृतिनिष्ठ युवा गढ़े जा सकते हैं।

दे.सं. विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने शांतिकुंज में आयोजित भारतीय शिक्षण मण्डल के तीन दिवसीय अभ्यास वर्ग (दिनांक 13 से 15 जून) के उद्घाटन सत्र में यह विचार व्यक्त किये।

भारतीय शिक्षण मण्डल का यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अभ्यासवर्ग था, जिसमें उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार व झारखण्ड के शिक्षण मण्डल के अनेक विद्वानों, वरिष्ठ पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत भी दूसरे दिन के प्रथम सत्र को संबोधित करने उपस्थित हुए।

भारतीय शिक्षण मण्डल के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने आने वाले समय चुनौतियों से निपटने के लिए ऐसे युवाओं को तैयार करने का आह्वान किया, जिनका लक्ष्य धन, साधन, सुविधा नहीं; मानवता की सेवा करना हो।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अंगद सिह, मंडल के संगठन मंत्री श्री मुकुल कानिटकर, प्रांतीय अध्यक्ष श्री मनोहर सिंह रावत, गुरुकुल कांगडी विवि के कुलपति प्रो.सुरेन्द्र कुमार, डॉ. महावीर अग्रवाल, श्री एचएच. धामी, मंडल की महिला प्रमुख डॉ. गीता मिश्र, बनवारीलाल जी, डॉ. ओपी. सिंह आदि अनेक शिक्षाविदों ने भी अपने विचारों से प्रतिभागियों को लाभान्वित कराते हुए शिक्षण मण्डल के अभ्यास वर्ग की सफलता में अविस्मरणीय योगदान दिया। प्रांतीय अध्यक्ष श्री मनोहर सिंह रावत ने सभी का आभार प्रकट किया।

शिक्षा जगत का आदर्श देव संस्कृति विश्वविद्यालय

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने शिक्षा जगत के एक अनुकरणीय आदर्श के रूप में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशेषताओं से सभा का परिचय कराया। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रतिभाशाली युवा अपने आचरण से विद्यार्थियों को प्रेरित-प्रभावित करने वाले आचार्य ही गढ़ सकते हैं। पिछले 15 वर्षों में इस विश्वविद्यालय ने हजारों संस्कारवान, सेवाभावी स्वयंसेवक समाज को समर्पित किये हैं।

बाल संस्कार शाला, पटियाला

पटियाला की प्राणवान कार्यकर्त्ता श्रीमती मीना गुप्ता अपनी बाल संस्कार शाला के माध्यम से बाल निर्माण का बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। उनकी बाल संस्कार शाला में 100 से अधिक बच्चे नियमित रूप से भाग ले रहे हैं। उनकी बदलती आदतों और जीवन का प्रभाव उनके अभिभावकों पर भी पड़ रहा है।

11 दिवसीय आकार शिविर ने बच्चों को सिखाई 12 प्रकार की विद्यायें

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव में गायत्री शिक्षण समिति और छत्तीसगढ़ शासन के संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 11 दिवसीय 'आकार' शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें 470 बच्चों ने भाग लेते हुए मूर्तिकला, कैलीग्राफी, नृत्यकला, पेंटिंग, जूट शिल्प, क्ले आर्ट, मृदाशिल्प, टैडिबियर, कुशन, ड्राई फ्लावर, मेंहदी आदि कलाएँ विशेषज्ञ गुरुओं के मार्गदर्शन में सीखीं। बच्चों ने बड़ी आकर्षक वस्तुएँ बनायीं, जिनकी प्रदर्शनी गायत्री शक्तिपीठ प्रांगण में लगायी गयी थी।

22 मई को शिविर का समारोहपूर्वक समापन हुआ। नगरमहापौर श्री मधुसूदन यादव समारोह के मुख्य अतिथि थे। गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर सुरजन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम संयोजक श्री हरीश गाँधी व आकार प्रभारी श्रीमती मुक्ति बैस सहित विशिष्ट अतिथियों और अनेक गणमान्यों ने बच्चों की कला का निरीक्षण करते हुए आयोजकों के प्रयासों की सराहना की।

धमतरी जिले ने की योग दिवस की शानदार तैयारी

कारागार, केन्द्रीय विद्यालय और गायत्री शक्तिपीठ पर हुए बृहद् प्रशिक्षण शिविर, लगभग 1000 लोग लाभान्वित हुए

जिला कारागार धमतरी में निरुद्ध बंदियों को योगाभ्यास कराते श्री रामप्रसाद आदित्य एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राएँ

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार द्वारा अंतराष्ट्रीय योग दिवस के निमित्त प्रादेशिक स्तर पर चलायी जा रही प्रशिक्षण शृंखला के अन्तर्गत धमतरी के कारागार परिसर में भी योगाभ्यास कराया गया। वहाँ निरुद्ध 300 बंदियों ने उसका लाभ लिया।

प्रमुख योग शिक्षक श्री रामप्रसाद आदित्य ने बंदियों को बेहतर जीवन के लिए नियमित योग करने को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि 'योग भगाये रोग' का सिद्धांत प्रचलित है, लेकिन वास्तविकता तो यह है कि योग से व्यक्ति का चिंतन और जीवन ही बदल जाता है। योगाभ्यास से क्रोध, आवेश शांत होता है, जीवन में सकारात्मकता आती है और अथाह संतोष मिलता है।

अभ्यास सत्र में जेल अधिकारी आत्माराम कुंजाम, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता हर्षद मेहता, दिलीप नाग, राजकुमार साहू, यशोदा साहू, शकुन कश्यप और देसंविवि की योग शिक्षिकाएँ मीनाक्षी रावत, प्रियमा सिन्हा एवं एकता उपस्थित थीं।

इसी तरह एक प्रशिक्षण सत्र केन्द्रीय विद्यालय, धमतरी में भी आयोजित किया गया था, जिसका 350 विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

मुख्य प्रशिक्षण शिविर गायत्री शक्तिपीठ धमतरी पर आयोजित हुआ, जिसमें योग दिवस पर जगह-जगह आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के संचालन के लिए सैकड़ों परिजनों को प्रशिक्षित किया गया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह

भोपाल। मध्य प्रदेश

भा. संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2016 का पुरुस्कार वितरण समारोह गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में 8 अप्रैल को संपन्न हुआ। समारोह में जिला स्तर पर वरीयता प्राप्त प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थियों के साथ जिले में सर्वाधिक विद्यार्थी बिठाने वाले प्रथम दस विद्यालयों के प्राचार्यों एवं अन्य विद्यालयों के सहयोगी शिक्षकों का सम्मान किया गया।

यह समारोह केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री प्रदीप दीक्षित, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. शंकर पाटीदार, प्रांतीय समन्वयक श्री एस.आर. चौधरी, श्री आर.के. नायक, श्री शिव कुमार पाण्डेय एवं जिला शिक्षा अधिकारी भोपाल श्री धर्मेन्द्र शर्मा की मुख्य उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, शिक्षक, पालक बड़ी संख्या मे समारोह में उपस्थित थे।

आरंभ में वरिष्ठ गणमान्यों ने परीक्षा के प्रगति प्रतिवेदन और उपलब्धियों और इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। जिला शिक्षा अधिकारी श्री धर्मेन्द्र शर्मा ने परीक्षा योजना की विशेषताओ से प्रभावित होकर जिले के अन्य विद्यालयों में परीक्षा संचालन के संबंध में एवं विद्यालयों में अधिक से अधिक विद्यार्थी इसमें भाग ले सकें इस हेतु अपने स्तर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मंच संचालन गायत्री परिजन श्री के.एल. पटेल ने किया। उन्होंने सभी प्राचार्यों एवं शिक्षकों को परीक्षा में सहयोग देने हेतु धन्यवाद दिया।

भोपाल में वरीयता प्राप्त विद्यार्थी एवं सहयोगी रहे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मान

सतना। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ सतना में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2016 का पुरुस्कार वितरण समारोह 14 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इसमें जिला एवं तहसील स्तर पर वरीयता प्राप्त सभी विद्यार्थियों को निर्धारित नक़द राशि, प्रशस्ति पत्र एवं युग साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। परीक्षा में सहयोग प्रदान करने वाले शिक्षकों और कार्यकर्त्ताओं को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ मुख्य अतिथि डॉ. सत्येन्द्र शर्मा प्राचार्य स्वशासी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय व शांतिकुंज प्रतिनिधि आर.पी. मिश्र व दिलीप शुक्ला द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। डॉ. शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा छात्रों को भारतीय संस्कृति की गरिमा बताने और समझाने के लिए बच्चों में प्राण फूँकने का काम कर रही है।

कार्यक्रम सम्पन्न कराने में सर्वश्री चंद्रिका प्रसाद तिवारी, बाल्मीकि विश्वकर्मा, एस.सी. उपाध्याय, स्वामी प्रसाद पाठक, ओंकारनाथ पाठक, लक्ष्मण प्रसाद यादव का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का समापन जिला संयोजक श्री कमलेश प्रसाद तिवारी द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ हुआ।

सतना में आयोजित हुआ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा सम्मान समारोह

बदायूँ। उत्तर प्रदेश

बदायूँ जिले के 144 विद्यालयों के 9658 विद्यार्थियों ने गतवर्ष भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लिया था। गायत्री शक्तिपीठ पर जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह 23 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि जिला जज श्री नरेन्द्र कुमार जौहरी ने समस्त सहयोगी शिक्षकों एवं वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को सत्साहित्य, प्रशस्ति पत्र एवं निर्धारित धनराशि प्रदान कर सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र जौहरी ने अपने आशीर्वचनों में उपस्थित शिक्षक-विद्यार्थियों से कहा कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा देश के युवाओं को सही राह दिखाकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में उठाया गया एक सार्थक कदम है।

कार्यक्रम में डी.पी. सिंह, मनोज वार्ष्णेय, सीमा राजन, शिवकुमार गुप्ता, प्रवीण कुमार, गुरुचरण लाल मिश्र, हरीश सक्सेना, संजीव कुमार शर्मा आदि समस्त कार्यकर्त्ताओं का बड़ा उत्साहभरा योगदान रहा।

गायत्री जयंती पर बड़े दायित्वों को सँभालने की उभरी उमंग

आरंभ हुआ 108 गाँवों में मिशन के विस्तार का अभियान

सांसद श्री लखनलाल साहू मंगल पूजन कर जनजागरण तीर्थयात्रा को रवाना करते हुए

चिल्हाटी, बिलासपुर। छत्तीसगढ़

देव संस्कृति विद्यालय, चिल्हाटी को केन्द्र मानकर 108 गाँवों में मिशन के विस्तार का संकल्प लिया है। गायत्री जयंती के दिन क्षेत्रीय सांसद श्री लखनलाल साहू ने जनजागरण तीर्थ यात्रा का शुभारंभ किया। यह यात्रा 75 गाँवों में सप्त आन्दोलनों का प्रचार-विस्तार कर रही है।

3 जून को अखण्ड जप करते हुए अभियान की सफलता की कामना की गयी। 4 जून को 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाया गया गायत्री जयंती, गंगा दशहरा और परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस अत्यंत प्रेरणाप्रद रहा। गणमान्यों ने इस तीर्थयात्रा को उद्देश्यपूर्ण और सही मायनों में पुण्यदायी बताया। इस अवसर पर जनपद पंचायत मस्तूरी की अध्यक्षा श्रीमती चांदनी भारद्वाज, पंचायत चिल्हाटी की सरपंच श्रीमती रुक्मिणी यादव विशेष रूप से उपस्थित थीं।

4 से 12 जून तक चली इस जनजागरण यात्रा में कुल 82 गाँवों में सप्त आन्दोलनों का प्रचार-प्रसार किया गया। योग शिक्षक श्री पुष्प राज एवं मीना कुमारी (देसंविवि) ने हर जगह योग दिवस के लिए पूर्वाभ्यास कराया। ग्रामतीर्थ यात्रा टोली में 13 वर्षीय हरीश से लेकर 73 वर्षीय श्री रामाधार महानंद तक शामिल थे।

नित्य गायत्री जपोगे तो आसुरी शक्तियों से बचे रहोगे

सेंधवा, खरगोन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार सेंधवा ने गायत्री जयंती के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित करते हुए श्रद्धालुओं में साधना से श्रेष्ठता की ओर अग्रगमन की हूक जगाई। मुख्य वक्ता श्री मेवालाल पाटीदार ने अपने संदेश में सामयिक परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए आसुरी शक्तियों के प्रभाव से बचने तथा श्रेष्ठ मार्ग पर चलते हुए संसार का कल्याण करने के लिए नित्य, नियमित रूप से गायत्री उपासना करने की सलाह दी। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव की लिखी पुस्तक गायत्री का सूर्योपस्थान का उल्लेख करते हुए दैनिक जीवन में जप, ध्यान, योग आदि साधनाओं के प्रभाव की व्याख्या की।

प्रथम दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखण्ड जप चला। गायत्री जयंती के दिन पाँच कुण्डीय यज्ञ एवं विविध संस्कार हुए। सायंकाल नगर सेंधवा के दावल वेडी पर भव्य दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ, सैकड़ों लोगों ने सामूहिक गायत्री महामंत्रोच्चार करते हुए विश्व कल्याण की प्रार्थना की।

छत्तीसगढ़ में युवा बहिनों ने सँभाली अपनी स्वतंत्र जिम्मेदारी

नवगठित वीमेन विंग की सदस्या बहिनें अपना उत्साह और संकल्प व्यक्त करते हुए

छत्तीसगढ़ में 'दिया' की पहली वीमेन विंग की स्थापना हुई

दुर्ग। छत्तीसगढ़

दीया कार्यालय, सिंधिया नगर दुर्ग में मनाये गये गायत्री जयंती समारोह में राज्य में दिया की पहली महिला इकाई की स्थापना की गयी। इसमें इंजिनियर, डॉक्टर, अध्यापिकाएँ एवं अन्य प्रबुद्ध बहिनें शामिल हैं। वे सब भाइयों की तरह ही स्कूल, कॉलेज, सामाजिक संगठनों में और घर-घर जाकर संपर्क करते हुए नारी शक्ति को प्रगति की दिशा में अग्रसर करने और समाज के विकास में सहयोगी बनाने को उत्साहित हैं। दुर्ग की जिला प्रभारी श्रीमती अंजना साहू को इस विंग का कार्यवाहक बनाया गया है।

यह कार्यक्रम श्रीमती कुमुदिनी मृदुली, सिविल जज की मुख्य उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इसमें सुश्री तिलोत्तमा, सीनियर मैनेजर देना बैंक, भिलाई, श्रीमती पुष्पा भरद्वाज, इंजी. विनीता साहू, कु. सुमन, कु. श्रद्धा साहू के साथ दिया छ.ग. प्रभारी डॉ. पी एल साव, डॉ. योगेन्द्र, इं. युगल किशोर , सौरभकान्त, पवन, कोमल, सत्य प्रकाश दीपक, अनिल गजपाल एवं रवि का विशेष सहयोग रहा। अभियान को गति देने और जनसमर्थन बढ़ाने के लिए सभी ने उत्साहभरे संकल्प लिये।

बृहद् वृक्षारोपण की योजना बनी, तैयारियाँ चल पड़ीं

राउरकेला। ओडिशा

गायत्री शक्तिपीठ राउरकेला में 5 कुण्डीय यज्ञ के साथ गायत्री जयंती पर्व समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण को प्रमुखता दी गयी। गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक वृक्षारोपण की योजना बनाकर उसके लिए कार्यकर्त्ताओं की टोलियाँ गठित कर दी गयीं। श्री राममोहन साहू ने गायत्री जयंती से ही यह कार्य आरंभ कर देने के लिए लोगों को उत्साहित किया। आयोजन में वहाँ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री नागरमल पोद्दार, प्रमोद अग्रवाल, प्रभात दास आदि का विशेष सहयोग रहा।

प्रत्येक प्रज्ञा केन्द्र पर हुए दो दिवसीय समारोह

बिलासपुर। छत्तीसगढ़

बिलासपुर जिले में सरकण्डा, चांटीडीह, लिंगियाडीह, रेलवे क्षेत्र आदि प्रज्ञा केन्द्रों पर दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ गायत्री जयंती, गंगा दशहरा और परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इन केन्द्रों पर सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखंड जप, यज्ञ, संस्कार आदि कार्यक्रमों के साथ मिशन का संदेश दिया गया।

मुख्य समारोह गायत्री शक्तिपीठ विनोबानगर पर आयोजित हुआ। वहाँ हुए 9 कुण्डीय यज्ञ में सैकड़ों लोगों ने भाग लेते हुए मिशन के रचनात्मक आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी के संकल्प लिये। गायत्री परिवार के पुरोहितों ने लोगों से राम और कृष्ण जैसी अवतारी चेतना के सान्निध्य के दुर्लभ अवसर का लाभ लेकर जीवन धन्य बनाने का आह्वान किया।

आकर्षक झाँकियों से दिया युग संदेश

करौली कुण्ड, अलवर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ करौली कुण्ड पर नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री जयंती पर्व मनाया गया। इससे पूर्व नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने 3 जून को अत्यंत आकर्षक झाँकियों के साथ माँ गायत्री की शोभायात्रा निकाली, जन-जन को विश्व कल्याण के महान अभियान में भागीदारी का आमंत्रण दिया।

शोभायात्रा में बाल संस्कार शाला संचालन, महिलाओं का कुटीर उद्योग, पेड़ न काटने देने का अभियान, नशामुक्ति-कुरीति उन्मूलन, स्वच्छता, प्रज्ञायोग, नारी जागरण, साधना से व्यक्तित्व परिष्कार आदि की जीवंत झाँकियाँ निकाली गयीं। श्री सतीश कुमार सारस्वत के अनुसार ये पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय रहीं, सभी के द्वारा सराही गयीं।

वातावरण परिशोधन के लिए किया नौ दिवसीय यज्ञ अनुष्ठान

हाटपीपल्या, देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री तीर्थ हाटपीपल्या में गायत्री जयंती के विशेष उपलक्ष्य में नौ दिनों (27 मई से 4 जून) तक कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रतिदिन प्रातः एक घंटे सभी के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के साथ सामूहिक जप किया गया। तत्पश्चात हर दिन 9 कुण्डीय यज्ञ हुआ, जिसमें वातावरण परिशोधन के लिए लोगों ने विशेष आहुतियाँ यज्ञ भगवान को समर्पित कीं। वृक्षारोपण का आह्वान भी किया गया। श्री गिरीश चंद्र गुरु के अनुसार इन दिनों बड़ी संख्या में विभिन्न संस्कार भी सम्पन्न हुए।

भा.सं.ज्ञा.प. का जिले के हर गाँव तक करेंगे विस्तार

देवास की कार्यकर्ता बहिनें बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ माँ गायत्री को नमन करते हुए

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ देवास पर आयोजित गायत्री जयंती समारोह में इस वर्ष जिले के हर गाँव और नगर की हर कॉलोनी में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को पहुँचा देने के संकल्प उभरे हैं। इस आशय का निर्णय वहाँ आयोजित कार्यकर्त्ता गोष्ठी में लिया गया। इससे पूर्व पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के माध्यम से नैष्ठिक परिजनों-श्रद्धालुओं ने माँ गायत्री एवं पावन गुरुसत्ता की प्रेरणाएँ हृदयंगम कीं, विश्वकल्याणार्थ आहुतियाँ समर्पित कीं।

समालखा, पानीपत। हरियाणा

समालखा शाखा ने गाँव पट्टी कलियारण में पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ पर्व मनाया। सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य श्री कर्णसिंह शास्त्री ने इसका संचालन करते हुए कहा कि गायत्री के गर्भ में आध्यात्मिक और भौतिक सभी प्रकार का ज्ञान-विज्ञान निहित है। कार्यक्रम लक्ष्मीनारायण मन्दिर में सम्पन्न हुआ। लगभग 200 लोगों ने इसमें भाग लिया। सभी को परम पूज्य गुरुदेव की लिखी छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रसाद रूप में भेंट की गयीं।

गुरुदेव-माताजी के व्यक्तित्व से प्रेरणा ली

संतरामपुर, महीसागर। गुजरात

संतरामपुर शाखा ने पाँच कुण्डीय यज्ञ और 1008 दीपयज्ञ के माध्यम से बड़े हर्षोल्लास के साथ गायत्री जयंती पर्व मनाया। इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के महान लक्ष्य और तपस्वी जीवन की प्रमुखता से चर्चा हुई, अनुकरण के संकल्प लिये गये।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

राजस्थान में जारी किये गये शासकीय आदेशों का लाभ उठायें

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजस्थान शासन द्वारा प्रदेश के प्रत्येक प्रारंभिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों (राजकीय/अनुदानित एवं मान्यता प्राप्त) में कक्षा 5वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों को शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित की जाने वाली भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल कराने में पूर्ण सहयोग देने के शासकीय आदेश जारी कर दिये गये हैं। अतिरिक्त निदेशक (शैक्षिक) प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर एवं उप निदेशक (माध्यमिक शिक्षा) राजस्थान बीकानेर द्वारा पत्र समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों एवं समस्त विद्यालयों के प्रमुखों को भेजे जा चुके हैं।

राजस्थान में परीक्षा तिथि 9 नवम्बर 2017

परिजनों से निवेदन है कि शासकीय आदेश का लाभ उठायें, अधिक से अधिक विद्यार्थियों को परीक्षा में शामिल करने के प्रयास किये जायें। आवश्यकतानुसार इन आदेशों की प्रतिलिपि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा कार्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार से प्राप्त की जा सकती है।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

पी.सी. शर्मा, शुक्लागंज, कानपुर। उत्तर प्रदेश

उपजोन केन्द्र कानपुर (शुक्लागंज) पर सेवाएँ प्रदान कर रहे वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री पी.सी. शुक्ला जी का 22 अप्रैल को देहावसान हो गया। वे सेवा निवृत्त विद्वान प्रवक्ता (गणित) थे। सेवा निवृत्ति के बाद मिशन के लिए ही वे पूरी तरह से समर्पित रहे। उनके आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए शुक्लागंज-कानपुर के कार्यकर्त्ताओं और उनके परिवारी जनों ने उन्हें भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री विक्रम मौर्य, किंगल। हिमाचल प्रदेश

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, शिमला के संयोजन का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाने वाले और राज्य के हर जिले में गाँव-गाँव जाकर युग चेतना विस्तार करने वाले श्री विक्रम मौर्य का दिनांक 8 मई 2017 को देहावसान हो गया। 64 वर्षीय स्व. मौर्य जी ने 30 वर्ष तक सीमा सुरक्षा बल में सेवाएँ प्रदान कीं। सन् 1983 से मिशन से जुड़े और फिर अपने को पूरी तरह से मिशन के प्रचार एवं विस्तार के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया था।

श्रीमती कमला सूद, आनन्द विहार, दिल्ली।

सन् 1992 से मिशन के साथ जुड़कर गुरुदेव के विचारों का विस्तार कर रही दिल्ली की कर्मठ कार्यकर्त्ता श्रीमती कमला सूद का दिनांक 30 मई को देहावसान हो गया। आनन्द विहार, पीतमपुरा निवासी श्रीमती सूद 86 वर्ष की थीं। वे हर कार्यक्रम में सक्रिय रहीं, सैकड़ों लोगों को गायत्री साधक बनाकर उनके जीवन को बदलने में अहम भूमिका निभाई।

श्री बावाभाई पटेल, वडोदरा। गुजरात

बाल निर्माण के लिए विशेष रूप से सक्रिय पादरा तहसील के निवासी बावाभाई पटेल का 5 मई को देहावसान हो गया। गतवर्ष 21 विद्यालयों से सम्पर्क कर 1500 विद्यार्थियों को उन्होंने परीक्षा में शामिल किया था।

सभ्य, सुसंस्कृत समाज की संरचना के लिए जगह-जगह चल रहे आन्दोलन

आँगनबाड़ी सुपरवाइजर्स एवं कार्यकर्त्रियों के प्रशिक्षण के प्रभावशाली परिणाम आ रहे हैं

देवास की कार्यकर्ता बहिनें बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ माँ गायत्री को नमन करते हुए

शांतिकुंज, हरिद्वार। उत्तराखंड

शांतिकुंज ने वर्ष 2015 से स्वस्थ और संस्कारवान संतति के लिए 'गर्भ महोत्सव' अभियान आरंभ किया था। दो वर्षों में इसने एक सफल राष्ट्रीय अभियान का रूप ले लिया है। अनेक स्थानों पर स्वास्थ्य विभाग और स्वयंसेवी संगठनों का शानदार सहयोग मिल रहा है।

'गर्भ महोत्सव' के अंतर्गत हरिद्वार जिले की प्रत्येक आंगनबाड़ी सुपरवाइजर और कार्यकत्रियों को शांतिकुंज में विशेष शिविर आयोजित कर प्रशिक्षित किया गया। इसके सत्परिणाम उभरने लगे हैं। प्रशिक्षित कार्यकर्त्रियों के सहयोग से जगह-जगह गर्भ महोत्सव संस्कार आयोजित हो रहे हैं, जिनमें समाज के हर वर्ग के लोग भाग ले रहे हैं।

- 10 शिविरों में 70 सुपरवाइज़र और 2850 आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों को शांतिकुंज में प्रशिक्षण दिया गया। इनमें हर धर्म, वर्ग की बहिनें शामिल थीं।
- अप्रैल 2017 तक हरिद्वार ब्लॉक के कार्यकर्त्ताओं द्वारा इन आंगनबाड़ी केन्द्रों के सहयोग से आयोजित कार्यक्रमों में 271 पुंसवन/गर्भ संस्कार कराये गये। इनमें से 63 संस्कार मुस्लिम महिलाओं के हुए।
- 148 अन्नप्राशन संस्कार हुए, जिनमें 40 मुस्लिम बच्चों के थे।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

लखनऊ में हुई बृहद् संगोष्ठी

शिवशांति आश्रम के प्रमुख सिंधी संत गर्भ महोत्सव अभियान को प्रोत्साहित करते हुए

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

28 मई को राजधानी के शिवशांति आश्रम में 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' विषय पर एक बृहद् संगोष्ठी हुई। नगर के सभी जोनों और आसपास के जिलों के प्रमुख 500 कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। इसे संबोधित करने शांतिकुंज से डॉ. गायत्री शर्मा, डॉ. ओ.पी. शर्मा, श्री आशीष सिंह और सुश्री ऋतु सिंह की टोली पहुँची थी।

डॉ. गायत्री शर्मा ने उत्तराखंड के साथ सारे देश में तेजी से गतिशील हो रहे गर्भ संस्कार महोत्सवों की जानकारी दी। उन्होंने शिशु के निर्माण में पुंसवन संस्कार के व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक लाभों की जानकारी पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशन के माध्यम से दी।

द्वितीय सत्र में श्री आशीष सिंह एवं सुश्री ऋतु सिंह ने बाल संस्कार शाला संचालन के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष समझाये। सभी जोन प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए अभियान को गति देने के संकल्प लिये। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती निष्ठा ने किया।

प्रशासनिक अधिकारियों की विशेष गोष्ठी

इसी अभियान को गति देने के लिए एक गोष्ठी अतिरिक्त महानिदेशक परिवार कल्याण डॉ. नीना गुप्ता के कार्यालय स्थित सभागार में हुई। डॉ. गायत्री शर्मा ने कहा कि यह अभियान गर्भ से ही माता एवं शिशु को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करने, माता-शिशु की मृत्युदर कम करने, कन्याभ्रूण हत्या रोकने, कुपोषण दूर करने आदि में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है। इस अभियान को आशा कार्यकर्त्ती व सुपरवाइजर्स एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के माध्यम से गति दी जा सकती है।

महानिदेशक ने शीघ्र ही उत्तर प्रदेश के सभी 72 जिलों में इस अभियान को गतिशील करने में सहयोग प्रदान करने के निर्देश जारी करने का आश्वासन दिया है।

दम्पति शिविर की अभिनव संकल्पना से अभिभूत है समाज

निघासन, (उत्तर प्रदेश)

रकेहटी में क्षेत्र का विशाल दम्पति शिविर आयोजित हुआ। बहराइच, सीतापुर, पीलीभीत, लखनऊ, फैजाबाद जिलों के 3500 दम्पतियों ने इसमें भाग लिया। 500 मुस्लिम परिवारों सहित हर वर्ग के लोग इसमें शामिल थे। सभी एकमत थे कि धर्म-सम्प्रदाय की भावनाओं से ऊपर उठकर परिवार में प्रेमभाव और समाज में सुख-शांति की स्थापना के लिए ऐसे शिविरों का आयोजन निरन्तर होते रहना चाहिए। युवा वर्ग युगऋषि के प्रगतिशील विचारों से विशेष रूप से प्रभावित हुआ।

500 मुस्लिम दम्पतियों सहित 3500 दम्पतियों ने भाग लिया

सभी दम्पतियों को प्रसाद स्वरूप पौधे भेंट किये गये

शांतिकुंज में युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री केपी दुबे कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। सभी दम्पतियों को प्रसाद स्वरूप एक-एक पौधा भेंट किया गया। 25 फरवरी को आयोजित इस शिविर के आयोजन में सर्वश्री विनोद कुमार सिंह, रविन्द्र यादव, आशीष गुप्ता, योगेश दीक्षित एवं प्रधान रामकुमार मौर्य ने प्रमुख दायित्व सँभाले।

गाँव-गाँव जनचेतना जगाने का प्रशंसनीय अभियान

पाटन, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

इस वर्ष ब्लॉक समन्वय समिति गायत्री शक्तिपीठ पाटन द्वारा विकास खंड के 22 गाँवों में पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं आदर्श विवाहों के कार्यक्रम आयोजित किये गये। यज्ञ श्रृंखला की पूर्णाहुति 27 से 29 अप्रैल को पाटन में 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई। शांतिकुंज से पहुँची श्री पूरन चंद्राकर की टोली ने इसे सम्पन्न कराया। यह जनचेतना जागरण अभियान अत्यंत उत्साहवर्धक रहा, शानदार संकल्प उभरे।

- पूर्णाहुति यज्ञ में स्थानीय परिजनों ने परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष तक ब्लॉक के हर गाँव में पंच कुण्डीय गायत्री यज्ञ का सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया है।
- हर वर्ष 20 गाँव में कार्यक्रम होंगे और इतने ही गाँवों में 2 दिवसीय पुस्तक मेले लगाये जायेंगे।

अपने तीनों पुत्र-पुत्रियों का आदर्श विवाह गायत्री परिवार के सार्वजनिक कार्यक्रमों में कराने वाले श्री मदन यादव का मंच पर विशेष रूप से स्वागत किया गया।

यज्ञ और सेवा के कई प्रकल्पों के साथ मनायी संत की जयंती

याजपुर (ओडिशा)

खरियामुण्डा, राउतसाही, याजपुर शाखा ने 10 से 13 मई की तारीखों में संत बाबा फगुदास की जयंती पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ मनाई। इसके साथ सेवा के अनेक प्रकल्प सम्पन्न हुए।

स्वास्थ्य शिविर में 150 मरीजों का निःशुल्क परीक्षण कर दवाइयाँ दी गयीं। अंतिम दिन कटक केन्द्रीय ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 40 यूनिट रक्तदान हुआ। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का पुरस्कार वितरण समारोह भी इसी कार्यक्रम में सम्पन्न हुआ। इस लोकप्रिय आयोजन की सफलता में सर्वश्री अशोक दास, गोपालकृष्ण दास, रमा दास, मदनमोहन राउत, श्रीमती प्रभासिनी दास आदि का प्रमुख योगदान रहा।

30 वर्षों से ज्ञानगंगा को घर-घर ले जा रहे हैं श्री दाउलाल साहू

धमतरी। छत्तीसगढ़

अपने जीवन को पूरी तरह से ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित कर देने वाले श्री दाउलाल साहू पिछले ३ वर्षों से मिशन की महती सेवाएँ कर रहे हैं। अपने झोला पुस्तकालय के माध्यम से उन्होंने न जाने कितने लोगों को भटकने से बचाया और सन्मार्ग दिखाया है। पूरा क्षेत्र उनकी लगन और गुरुनिष्ठा के आगे नतमस्तक है।

श्री दाउलाल साहू कार्यालय, विद्यालय और घर-घर जाकर मिशन की पत्रिकाएँ पहुँचाते हैं, युग साहित्य लोगों को पढ़ाते हैं। हाल ही में उन्हांने ग्राम बोडरा, जिला संबलपुर (ओडिशा) में अखण्ड ज्योति की 2000 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की हैं।

युवा शिविर **दुर्ग। छत्तीसगढ़** : ब्लॉक समन्वय समिति पाटन व माता भगवती देवी गौशाला पचमेड़ी के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 से 19 मई तक युवा शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें 160 लोगों ने भाग लिया। अंतिम दिन 108 प्रतिभागियों ने गुरुदीक्षा ग्रहण की। 13 स्थानों पर बाल संस्कार शाला संचालित करने के संकल्प उभरे। शिविर के माध्यम से 15 नये युवा मंडलों का गठन भी किया गया।

वार्षिकोत्सव पर 108 घरों में यज्ञ

पेटलावद, झाबुआ। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ पेटलावद ने 28 मई को अपना 35वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर 108 घरों में सामूहिक यज्ञ का शानदार प्रयोग सम्पन्न हुआ। आसपास के जिलों और राज्यों से घर-घर यज्ञ कराने के लिए युग निर्माणी पुरोहितों की टोली एकत्रित की गयी। हजारों लोगों तक युग संदेश पहुँचाते हुए केवल अपने लिये ही जीने की बजाय राष्ट्र के विकास के लिए किये जा रहे सामूहिक प्रयोगों में भागीदारी करने की प्रेरणा उन्हें दी गयी। स्वच्छता, नशामुक्ति, वृक्षारोपण, स्वावलम्बन, साधना जैसे आन्दोलनों को सामूहिक रूप से चलाने का संदेश दिया गया।

गायत्री शक्तिपीठ पेटलावद पर पाँच कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री महेश कुमार बिरला की टोली ने इसका संचालन किया।

गढ़ी केसरी और ग्राम टेहा में निकलीं सृजन चेतना विस्तार रैली

गन्नौर, सोनीपत। हरियाणा

प्रज्ञा मण्डल गन्नौर ने 22 मई को नशामुक्ति, जलसंरक्षण, वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण आदि को प्रोत्साहित करने के साथ बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाओ, दहेज प्रथा मिटाओ जैसे अभियानों को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रभावशाली रैली निकाली। शाश्वत चेतना वरिष्ठ मा. विद्यालय गढ़ी केसरी के 150 छात्र-छात्राओं ने इसमें भाग लेते हुए गढ़ी केसरी की गली-गली में यह संदेश गुंजायमान किया। विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती अंजू त्यागी का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने हरी झंडी दिखाकर अभियान का शुभारंभ किया था।

ग्राम टेहा में सरपंच श्रीमती पूजा त्यागी एवं श्री राजबल त्यागी ने रैली को हरी झंडी दिखाई। बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने रैली में भाग लिया। रैली के समापन पर इन सूत्रों को अपने जीवन में अपनाने के संकल्प दिलाये गये।

गढ़ी केसरी की रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते गणमान्य

राजधानी के हृदय स्थल पर बहिनों द्वारा निकाली गयी रैली

दिल्ली। महिला जागृति अभियान, दिल्ली की बहिनों ने 28 मई के दिन दिल्ली के हृदय स्थल कनाट प्लेस में एक विशाल जनजागरण रैली निकाली। इसे संबोधित करते हुए शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री जमुना प्रसाद साहू, अशोक भारद्वाज एवं दिल्ली के कार्यकर्त्ता श्री सत्यप्रकाश ओम जी ने बहिनों से सभ्य समाज के निर्माण के लिए आगे आने और संगठित होने का आह्वान किया गया।

प्रबुद्धजनों के समक्ष रखी राष्ट्र-निर्माताओं की वेदना और संकल्पना

बिजौलियाँ, भीलवाड़ा। राज.

विचार क्रांति के समर्पित प्रखर वक्ता श्री राव सवाई चंद्रवीर सिंह बिजौलियाँ द्वारा महाराणा प्रताप जयंती की पूर्व संध्या 27 मई के दिन गायत्री शक्तिपीठ बिजौलियाँ में विशेष गोष्ठी आयोजित की गयी। उन्होंने इसे संबोधित करते हुए परम पूज्य गुरुदेव और राष्ट्र निर्माताओं की संकल्पना और उनकी वेदना गणमान्यों के समक्ष व्यक्त की।

श्री बिजौलियाँ जी ने कहा कि हमें आजादी तो 70 वर्ष पूर्व मिल गयी, लेकिन गुलामी के संस्कार नहीं गये हैं; हमारी राजनीति अभी तक राष्ट्रनीति नहीं बन पायी है। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को समझकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भारत की शाश्वत संकल्पना को साकार करने का आह्वान उपस्थित गणमान्यों से किया।

यह संगोष्ठी पैसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर के उपकुलपति श्री भगवती प्रसाद शर्मा के मुख्य आतिथ्य में हुई। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित कया गया। भीलवाड़ा नगर, मांडलगढ़, बिजौलियाँ तथा क्षेत्र के गणमान्य संगोष्ठी में शामिल हुए।

विदेशों में गायत्री जयंती बड़े उत्साह से मनायी गयी

लेस्टर में 17 वर्षों बाद हुआ विशाल कार्यक्रम

लेस्टर। इंग्लैण्ड

लेस्टर में इस वर्ष 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री जयंती पर्व मनाया गया। कार्यक्रम शांतिकुंज के प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में प्रजापति एसोसिएशन हॉल, लीस्टर में आयोजित था। इसमें हॉल की 1200 की क्षमता से कहीं अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इंग्लैण्ड के दूर-दूर के शहरों से आकर नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने इस महायज्ञ में अपनी भागीदारी व्यक्त की।

28 मई को आयोजित हुआ यह कार्यक्रम 17 वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद वहाँ आयोजित होने वाला सबसे बड़ा कार्यक्रम था। डॉ. चिन्मय जी ने अपने सारगर्भित संदेश में कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के विचारों, सूत्र-सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारते हुए जीवन को ही यज्ञमय बनाने की साधना करनी चाहिए। हमें अपने विचार, कर्म और भावनाओं को निरंतर परिष्कृत करते हुए लोकमंगल के कार्यों में जुट जाना चाहिए।

यज्ञ में उपस्थित मंत्री कीथ वाज, मेयर और पार्षद

डॉ. चिन्मय पण्ड्या गायत्री जयंती समारोह को संबोधित करते हुए

कार्यक्रम का संचालन शांतिकुंज से इंग्लैण्ड की प्रवज्या पर पहुँचे श्री पुष्कर राज ने स्थानीय परिजनों के सहयोग से बड़े प्रभावशाली गीत और कर्मकाण्ड के साथ सम्पन्न कराया। इस कार्यक्रम में लेस्टर के मेम्बर ऑफ पार्लियामेण्ट एवं यूनाइटेड किंग्डम की सरकार में मंत्री श्री कीथ वाज, लेस्टर के मेयर एवं तीन से ज्यादा विधान परिषद् सदस्य (काउंसिलर) सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। लेस्टर के अलावा कोवेण्ट्री, लंदन, बर्मिंघम, कार्डिक्स, ऑक्सफोर्ड आदि से नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने पहुँचकर यज्ञ की व्यवस्थाएँ सँभाली। दिया, यू. के. ग्रुप का अविस्मरणीय योगदान रहा।

अगले वर्ष परम वंदनीया माताजी के पदार्पण की रजत जयंती पर होगा भव्य श्रद्धांजलि समारोह

जुलाई, सन् 1993 के उन गौरवशाली क्षणों को डॉ. चिन्मय जी ने बड़ी श्रद्धा-भावना के साथ याद किया, जब जगतजननी परम वंदनीया माताजी के पावन चरण इंग्लैण्ड की भूमि पर पड़े थे। डॉ. चिन्मय जी ने आगामी वर्ष उनके आगमन की रजत जयंती पर एक विशाल कार्यक्रम एवं 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित कर उन्हें भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करने का आह्वान किया। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी का वह वीडियो संदेश भी दिखाया गया, जिसमें उन्होंने इस रजत जयंती कार्यक्रम में स्वयं उपस्थित होने का आश्वासन दिया है।

इसके लिए डॉ. चिन्मय जी की अध्यक्षता में श्री सतीशभाई, शर्मिष्ठाबेन के घर सभी ट्रस्टियों की विशेष बैठक आयोजित हुई। गायत्री परिवार प्रतिनिधियों द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्य पर चर्चा की गयी, तदनुसार उत्साहपूर्वक तैयारियाँ चल पड़ी हैं। गोष्ठी में सुरेशभाई, पद्माबेन, रजनीकान्तभाई, कपिला बेन, मनसुखभाई, इंद्रजीतभाई, दिनेश भाई, पंकजभाई, आनंद शर्मा, पूजा शर्मा आदि भी उपस्थित थे।

भगवती कुंज, लंदन में प्रवाहित हुई ज्ञानगंगा

लंदन। यूनाइटेड किंगडम

हजारों लोगों में युग निर्माणी आस्थाओं का पोषण कर रहे भगवती कुंज, लंदन में 4 जून को दिन गायत्री जयंती पर्व मनाया गया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री पुष्कर राज ने इस अवसर पर दीपयज्ञ का संचालन किया। उन्होंने कहा कि गंगा और गायत्री लौकिक और आध्यात्मिक जगत में प्रवाहित होने वाली दो दिव्य धाराएँ हैं। जन-जन के जीवन में जब गायत्री

की धारा प्रवाहित होगी, तभी विवेक जागेगा, संवेदना उभरेगी, तभी गंगा भी निर्मल होगी, समाज श्रेष्ठ बनेगा और लोगों को उनकी समस्याओं का सही समाधान मिलेगा। उन्होंने श्रद्धालुओं से युगभगीरथ परम पूज्य गुरुदेव के अग्रदूत बनकर जन-जन तक ज्ञानगंगा गायत्री को पहुँचाने का आह्वान किया, संकल्प भी दिलाये।

- कार्यक्रम में आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का शांतिकुंज से भेजा गया वीडियो संदेश दिखाया गया।
- लंदन ब्रिज के पास हुई आतंकी घटना में मारे गये लोगों को श्रद्धांजलि दी गयी।
- आयोजन की सफलता में सर्वश्री दिनकर भाई, कोकिलाबेन, किरन भाई तथा उनकी टीम का सराहनीय सहयोग रहा। नार्थ लंदन, ईस्ट लंदन, सिकली, कोवेंट्री, वेल्फोर्ड, क्रोवली, लेस्टर क्रेनइच आदि क्षेत्रों के लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

मॉरिशस में चार दिवसीय महोत्सव में उपराष्ट्रपति भी शामिल हुए

गायत्री शक्तिपीठ लोंग माउण्टेन पर गायत्री जयंती के उपलक्ष्य में चार दिवसीय महोत्सव का आयोजन हुआ। यह कार्यक्रम 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें उपराष्ट्रपति माननीय श्री वायापुरी परम शिवम पिल्लै सहित मॉरिशस के कोने-कोने से आये श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

प्रथम दिन अखण्ड जप चला। अगले दिन शक्तिपीठ से यज्ञस्थल तक आकर्षक मंगल कलशयात्रा निकाली गयी। तत्पश्चात् स्थानीय बाल संस्कारशाला के बच्चों

दीपयज्ञ में आरती करते श्रद्धालु, कार्यक्रम प्रस्तुत करती टोली

ने अपने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रमों से भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठताओं का परिचय कराया।

दीपयज्ञ के मुख्य वक्ता आचार्य संदीप भट्ट ने युवा क्रान्ति वर्ष पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रकाश में स्वयं उत्कृष्ट जीवन जीने और समाज को श्रेष्ठ बनाने में सहयोगी बनने का आह्वान किया। कार्यक्रम संयोजक सुश्री अनूपा कूलेन के अनुसार मिशन के प्रज्ञागीतों से लोग बहुत प्रेरित और प्रभावित हुए।

विचारों की शक्ति शस्त्र की शक्ति से भी अधिक होती है। शस्त्र से कुछ लोग या कुछ देश जीते जा सकते हैं, लेकिन विचारों के प्रभाव से सारी दुनिया बदल सकती है।

न्यूज़ीलैण्ड में सम्पन्न हुआ 51 कुण्डीय यज्ञ

वेलिंगटन। न्यूज़ीलैण्ड

शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री शांतिलाल पटेल के सान्निध्य में न्यूज़ीलैण्ड वासियों ने 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस मनाया। कार्यक्रम भारत भवन, कैम्प स्ट्रीट किलबर्नी में आयोजित किया गया था। शांतिकुंज प्रतिनिधि ने समय के दुष्प्रभावों से बचने के लिए आद्यशक्ति की शरण में आने और विश्व कल्याण के महाभियान में सहयोगी बनने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम अत्यंत आनन्ददायक एवं प्रेरणाप्रद था। स्थानीय भाई-बहिनों और बाल संस्कार शाला के बच्चों ने भी प्रज्ञागीत, मंत्रोच्चार आदि विभिन्न में शांतिकुंज प्रतिनिधि का सहयोग करते हुए अत्यंत उल्लास अनुभव किया।

आदरणीय डॉ. साहब का वीडियो संदेश दिखाया गया। शांतिकुंज आने के लिए उनका भावभरा आमंत्रण पाकर सभी अभिभूत थे। इस विशिष्ट अवसर पर लोगों ने संस्कार भी खूब कराये।

IDF India Development Founda of Overseas Indians

भारत सरकार द्वारा गायत्री परिवार प्रतिनिधि की इण्डिया डेवलपमेण्ट फाउण्डेशन में नियुक्ति

भारत सरकार की विदेश मंत्री और इंडिया डेवलपमेण्ट फाउण्डेशन ऑफ ओवरसीज़ इंडियन्स (IDF-OI) की अध्यक्षा माननीय सुषमा स्वराज ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या को IDF-OI के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ का सदस्य नियुक्त किया है। वे 1 जुलाई 2017 से 31 जनवरी 2019 तक इस पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे।

इंडिया डेवलपमेण्ट फाउण्डेशन ऑफ ओवरसीज़ इंडियन्स भारत सरकार द्वारा स्थापित सामाजिक एवं विकास परियोजनाओं के लिए कार्य करने वाला गैर लाभकारी ट्रस्ट है। इसका संचालन करने वाले बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ लोकमंगल के लिए समर्पित जाने-माने प्रभावशाली भारतीय एवं प्रवासी भारतीय हैं।

IDF-OI ने पिछले 2 वर्षों में स्वच्छ भारत, नमामि गंगे जैसे भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों को वित्त पोषित कर उनके विकास में बड़ा योगदान दिया है। इसने स्वच्छता, शिक्षा, महिला एवं बाल विकास और स्वास्थ्य सेवा की अनेक परियोजनाओं को भी वित्त पोषित किया है।

डॉ. चिन्मय जी ने इसे पावन गुरुसत्ता के सतयुगी संकल्प को पूरा करने की दिशा में एक अच्छा अवसर बताया। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार की इस प्रक्रम में भागीदारी परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के शुभाशीष के फलस्वरूप ही होने जा रही है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

डी.के.डी. पीक पर फहराया देव संस्कृति विश्वविद्यालय का ध्वज

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के श्री नरेन्द्र गिरि ने नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ माउण्टेनियरिंग के बैनर तले एडवांस माउण्टेनियरिंग कोर्स सराहनीय प्रदर्शन के साथ सफलता पूर्वक पूरा कर लिया है। उन्होंने गंगोत्री ग्लेशियर के 18700 फीट ऊँचे डी. के.डी. ग्लेशियर पर चढ़ाई की और वहाँ देव संस्कृति विश्वविद्यालय की पताका फहराई। इस क्लाइंबिंग दल में 20 प्रतिभागीगण शामिल थे।

श्री नरेन्द्र गिरि ने अपनी सफलता का श्रेय आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को दिया। उन्होंने कहा कि ऐसे साहसिक कार्यों के लिए जिस प्रेरणा-प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है, वह उन्हें अपने दोनों ही अभिभावक और पूरे विश्वविद्यालय परिवार से सतत मिलता रहा।

श्री नरेन्द्र गिरि डीकेडी पीक पर विवि का ध्वज फहराते हुए और नीचे अपने दल के साथ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने योग के क्षेत्र में रचा इतिहास

13

विद्यार्थियों को मिली जूनियर रिसर्च फेलोशिप

देसंविवि के जितेन्द्र कुमार यादव और लोकेश चौधरी राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय रहे

इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर 22 जनवरी को भारत के विभिन्न शहरों में आयोजित जेआरएफ-योग की परीक्षा पास करने में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के 13 विद्यार्थी सफल रहे हैं। इनमें से जितेन्द्र कुमार यादव ने 84 प्रतिशत अंक लेकर देशभर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, तो वहीं लोकेश चौधरी 82.5 प्रतिशत अंक के साथ दूसरे स्थान पर रहे। उनके अलावा अरुण कुमार, सिद्धि साहू, राकेशल विश्वजित वर्मा, कीर्ति मौर्य, रविन्द्र बलौदिया, केवल चक्रवर्ती, गीतिका कोहली, उज्ज्वल मास्के, विजय कुमार तथा साधना डबरे ने जूनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त की है। उल्लेखनीय है कि यह फेलोशिप प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को भारत सरकार शोधकार्यों के लिए सहयोग राशि प्रदान करती है।

41

33 विद्यार्थी एवं 8 स्टाफ सदस्यों ने नेट परीक्षा पास की

इस वर्ष सीबीएसई और यूजीसी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के 33 विद्यार्थी सफल रहे। उनके अलावा देसंविवि के स्टाफ के 8 लोगों ने भी यह परीक्षा उत्तीर्ण की।

योग के क्षेत्र में यह विश्वविद्यालय की असाधारण एवं अद्वितीय सफलता है। एक ही वर्ष में किसी एक विवि के इससे ज्यादा विद्यार्थियों ने जेआरएफ एवं नेट परीक्षा शायद ही कभी उत्तीर्ण की होगी।

कुलाधिपति मान. डॉ. प्रणव पण्ड्या, कुलपति श्री शरद पारधी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या सहित समस्त विवि. परिवार ने इस सफलता पर गौरव अनुभव करते हुए अपने विश्वविद्यालय एवं अपने प्रदेश का नाम रोशन करने वाले इन विद्यार्थियों को सभी बधाई दी। उन्होंने कहा कि हमारे विद्यार्थियों ने योग को पाठ्यक्रम मात्र नहीं माना, जीवन शैली में अपनाया है।

विश्व पर्यावरण दिवस से नया अभियान आरंभ

विश्व पर्यावरण दिवस पर श्रीरामपुरम, शांतिकुंज में वृक्षारोपण करते आदरणीय डॉ. प्रणव जी

"पर्यावरण और अंत:करण का परस्पर घना सम्बंध है। अंतस् में आध्यात्मिकता की प्यास हो, उमंग हो, तभी पर्यावरण बच सकता है।"
• आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

अनेकों भगीरथ चाहिए

पर्यावरण दिवस-5जून को शांतिकुंज के सत्संग भवन में आयोजित विशेष सभा को संबोधित करते हुए आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने उपर्युक्त विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि पर्यावरण से पंच तत्त्वों को पोषण मिलता है। दूषित पर्यावरण के कारण ही मानवीय संवेदना सूख रही है, क्रूरता, नीरसता और तनाव बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर अध्यात्म के अनुयायी गायत्री उपासक पर्यावरण संरक्षण के अभियान में अपना भागीरथी पुरुषार्थ कर रहे हैं।

इस अवसर पर उन्होंने 150 पहाड़ियों को हराभरा करने में अहम भूमिका निभाने वाले बुरहानपुर निवासी श्री मनोज तिवारी, कोलकाता में सतत 333 सप्ताह से वृक्षारोपण अभियान में जुटे श्री रवि शर्मा के विशिष्ट पुरुषार्थ को बड़ी श्रद्धा के साथ याद किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण बचेगा तो दुनिया बचेगी। इसके लिए समाज में मनोज और रवि जैसे अनेकों भगीरथ खड़े होने चाहिए।

जीवन शैली बदलनी होगी

आदरणीय डॉ. साहब ने अपने विस्तृत उद्बोधन में गंगा सहित तमाम जलस्रोतों की सफाई और वृक्षारोपण सहित हर व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले अनेक उपायों की चर्चा की। जल और बिजली का दुरुपयोग रोकने, प्लास्टिक के उपयोग से बचने, शहरों की ओर पलायन को रोकने, औद्योगीकरण की जगह कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने, जैविक खेती को प्रोत्साहित करने, कचरा मैनेजमैण्ट अभियानों को गतिशील करने का आह्वान उन्होंने किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण अभियान की सफलता हमारी जीवन शैली पर निर्भर करती है। गुरुदेव के बताये 'सादा जीवन-उच्च विचार' के सूत्र को जीवन में चरितार्थ करते हुए साधकोचित जीवन जीना होगा, तभी हमारी शोषण और उपभोग की प्रवृत्ति थमेगी, पोषण और सदुपयोग की वृत्ति जागेगी।

वृक्षारोपण

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने श्रीरामपुरम में पौधारोपण किया। उन्होंने कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं और परिजनों की विशेष उपस्थिति में सीता अशोक का पौधा लगाया।

सीता अशोक की पौध बाँटीं

पर्यावरण संगोष्ठी के समापन पर उपस्थित सभी परिजनों को वृक्षारोपण, जलस्रोतों की सफाई जैसे संकल्प दिलाये गये। मंचासीन वरिष्ठ महानुभावों ने सभी को सीता अशोक की पौध निःशुल्क भेंट की। इस अवसर पर शांतिकुंज के कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ता आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, डॉ. बृजमोहन गौड़, डॉ. ओपी शर्मा, श्री कालीचरण शर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन आन्दोलन प्रकोष्ठ प्रभारी श्री केपी दुबे ने किया। इस कार्यक्रम में उद्यान विभाग प्रभारी श्री सुधीर भारद्वाज का विशेष योगदान रहा।

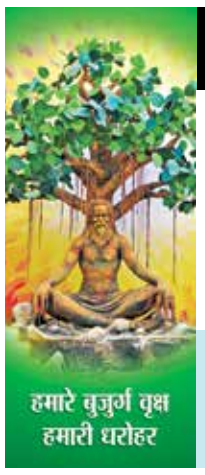

नया अभियान हमारे बुजुर्ग वृक्ष हमारी धरोहर

शांतिकुंज द्वारा पर्यावरण दिवस से हरीतिमा संवर्धन को प्रोत्साहित करने के लिए एक नयी योजना-'हमारे बुजुर्ग वृक्ष हमारी धरोहर' का शुभारंभ किया गया है। इसका शुभारंभ करते हुए आदरणीय डॉ. साहब ने बताया कि हर गाँव-शहरों में बड़े और पुराने वृक्ष उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। एक-एक वृक्ष जड़ से लेकर शिखर तक अपने में समृद्ध जैव विविधताओं को धारण किये होता है। तथाकथित विकास के नाम पर उन्हें नष्ट कर दिया जाता है, जिसके कारण पर्यावरण का भारी क्षति पहुँचती है।

'हमारे बुजुर्ग वृक्ष हमारी धरोहर' योजना के अन्तर्गत गाँव-शहरों के बुजुर्ग वृक्षों को कलावा बाँधकर उनको काटने से बचाने, थाँवले बनाकर उन्हें पोषित करने, आसपास सुंदर चबूतरे बनाने, समय-समय पर उनका पूजन करने, क्रमशः वहाँ पंचवटी, उपवन जैसा विकास करने के क्रम आरंभ किये जायेंगे।

शांतिकुंज के बैंक खाता नंबर

मद		दान के लिए	पत्रिकाओं की सदस्यता एवं साहित्य के लिए
बैंक खाते का नाम		श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, हरिद्वार	श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी)
बैंक का नाम	IFSC	खाता नम्बर	खाता नम्बर
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	SBIN0002350	10876858311	-----
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	SBIN0010588	------	30631606578
पंजाब नेशनल बैंक	PNUB0469400	3129010100000018	4694000100003986
एक्सिस बैंक	UTIB0000156	156010100013846	156010100139120
एचडीएफसी बैंक	HDFC0000943	09431450000157	09431450000037
आईसीआईसीआई बैंक	ICIC0000239	023901000010	-----
बैंक ऑफ बरोडा	BARBOHARDWA	09260100004639	-----

शांतिकुंज आपदा राहत कोश में धनराशि जमा करने के लिए : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया – खा.सं. 30491675367

विदेश के लिए : HDFC Bank A/c No : 09431170000022 MIRC: 249240002 Branch code 000945

नोट : अपनी पे-इन स्लिप की कॉपी पत्र या ई-मेल से मद की पूरी जानकारी सहित शांतिकुंज को अवश्य भेज दें।

माँ गंगा-गायत्री के अवतरण पर्व पर शांतिकुंज में उमड़ा सृजन चेतना का दिव्य प्रवाह

गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में शांतिकुंज में तीन दिवसीय (2 से 4 जून) समारोह परम्परागत कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। तीनों दिन के विशिष्ट उद्बोधन, जनजागरण रैली, संस्कार, दीपयज्ञ आदि कार्यक्रमों ने गायत्री और गुरुदेव की विराट चेतना तथा उनकी अकूत सामर्थ्य का बोध कराया। शांतिकुंज में उपस्थित हजारों परिजनों और इण्टरनेट के माध्यम से देश-विदेश के करोड़ों लोगों को युगशक्ति गायत्री की उपासना से आत्मबल संवर्धन और उनके सृजनात्मक कार्यों में सुनियोजन की प्रेरणा दी गयी। युग साधकों को अग्रदूत बनकर युगभगीरथ परम पूज्य गुरुदेव द्वारा अवतरित ज्ञानगंगा को घर-घर, गाँव-गाँव पहुँचा देने के संकल्प दिलाये गये। परम वं. माताजी की जन्म शताब्दी-2026 तक के नौ वर्षीय अनुष्ठान और उसके अंतर्गत किये जाने वाले कार्यों के लिए मनोभूमि तैयार की गयी।

आदरणीया जीजी एवं आदरणीय डॉ.साहब का संदेश

"गायत्री चित्त को निर्मल करने की साधना है। मंत्र चाहे कोई भी हो, सिद्धि तभी मिलती है जब चित्त निर्मल हो। गायत्री उपासक अपने विवेक और आत्मबल के सहारे कभी भटकता नहीं, हर चुनौती को पार करता चला जाता है। **• आदरणीया शैल जीजी**

"गायत्री राष्ट्र आराधना का मंत्र है। गायत्री ज्ञान का बीज है। गायत्री साधना से विकसित प्रखर प्राण चेतना ही उसे पशुओं के तरह केवल अपने और अपने परिवार के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र को ऊँचा उठाने के लिए जीने की प्रेरणा और सामर्थ्य प्रदान करती है। **• आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी**

आद. डॉ. साहब एवं आद. जीजी गायत्री जयंती का संदेश देते हुए

सृजनशील अग्रदूतों का सम्मान

बायें-शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री डेमनिया भाई को सम्मानित करते हुए और दायें- मंच पर सभी सम्मानित गणमान्य व वरिष्ठ कार्यकर्त्ता

गायत्री जयंती के विशेष कार्यक्रमों के अंतर्गत 2 जून को सृजन की विविध धाराओं को गतिशील करने का आदर्श प्रस्तुत करने वाले युगऋषि के अग्रदूतों का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आद. डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने की। इस अवसर पर आद. श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, आद. गौरीशंकर शर्मा जी, श्री केसरी कपिल जी, डॉ.बृजमोहन गौड़ जी आदि शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता मंचासीन थे। सभी महानुभावों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

सम्मानित हुए महानुभाव

श्री केके विनोद, बालोद, छत्तीसगढ़ (बाल संस्कारशाला), श्री वीरेन्द्र अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान (सद्ज्ञान विस्तार), डॉ. शिवनारायण सक्सेना, जोबट जिला अलीराजपुर, मध्य प्रदेश (पर्यावरण संतुलन व जलस्रोतों की सफाई), श्री रामसिंह यादव, बदायूँ उत्तर प्रदेश निवासी शांतिकुंज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता (योग का विस्तार), श्री प्रफुल्ल पटेल, दुर्ग-छत्तीसगढ़ (ग्राम स्वावलम्बन), श्रीमती रमिलाबेन आर. पटेल, महेसाणा-गुजरात (नारी जागरण), श्री डेमनिया भाई, बड़वानी मध्य प्रदेश (आदिवासियों को व्यसन मुक्त करने), श्री संजय कश्यप, राजगढ-राजस्थान (वृक्षारोपण), श्री दिनेशचन्द्र मैखूरी कर्णप्रयाग-उत्तराखण्ड (बलिप्रथा निवारण), श्री रामचन्द्र गुप्ता, कानपुर उत्तर प्रदेश एवं श्री ओमपाल शर्मा बागपत उत्तर प्रदेश (निर्मल गंगा जन अभियान) श्री मदनलाल खण्डेलवाल, खंडवा-मध्य प्रदेश (आदर्श ग्राम अजंदी का निर्माण), श्री मनोहरलाल माहेश्वरी, राजसमंद-राजस्थान (भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा)

सर्वधर्म सभा

प्रथम दिन सायंकाल की विशेष सभा में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा, श्री संदीप कुमार व श्री सुधीर भारद्वाज तथा वडोदरा के श्री अरविन्द कुमार एवं पंजाब प्रांत के श्री शोकेन्द्राचार्य ने क्रमशः हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम और सिक्ख धर्म के प्रतिनिधि के रूप में इन धर्मों में निहित सद्बुद्धि की प्रार्थना, प्रेम, सहिष्णुता, मानवता के सूत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र ने मानवमात्र के बीच निहित भेदभाव कम कर आपसी प्रेमभाव बढ़ाने की प्रेरणा दी।

ऋषियुग्म के स्मारकों पर श्रद्धा सुमन समर्पित करते परिजन

विशिष्ट उद्बोधन

2 जून की अपराह्न श्री टीसी शर्मा ने 'आदर्श ग्रामों में गौ आधारित कृषि एवं कुटीर उद्योग' विषय पर उद्बोधन दिया। 3 जून को योगयुक्त व व्यसन मुक्त विषय पर संबोधित करते हुए शांतिकुंज रचनात्मक प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री केदार प्रसाद दुबे ने कहा कि योग मनुष्य जाति के लिए समग्र समाधान के रूप में है। पर्व की पूर्वसंध्या पर आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, डॉ. बृजमोहन गौड़, डॉ. गायत्री शर्मा एवं प्रो. प्रमोद भटनागर के सामयिक विषयों पर उद्बोधन हुए।

गायत्री जयंती पर्व पर आदरणीया जीजी, डॉ. साहब के श्रीमुख से गायत्री महामंत्र की दीक्षा-यज्ञोपवीत संस्कार कराते भाई-बहिन। गायत्री जयंती पर्व पर बटुकों के यज्ञोपवीत, मुण्डन, विवाह, वानप्रस्थ एवं अन्यान्य संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न कराये गये।

Ÿæ×Ìè àæÜÕæÜæ Â‡ÇKæ àææç‹Ì·¤Á, ãçÚUmæÚU SßæׯÌè Ÿæè ßÎ×æÌæ »æØ~æè ÅþSÅU (Åþè°×ÇUè) ŸæèÚUæ×ÂÚU×, »æØ~æè Ù»ÚU, àææç‹Ì·¤Á, ãçÚUmæÚU mæÚUæ Â·¤æçàæÌ ÌÍæ ¥çÕ·¤æ çÂÅUâ °‡ÇU Õæ§ÇUâ, {z{·¤ ÎãÚUæ¹æâ, ÂÅUÜ Ù»ÚU, §ÇçSÅU¥Ü °çÚUØæ, ÎãÚUæÎÙ-248001 (©žæÚUæ¹‡Ç) × ×ç¼ÌÐ âÂæÎ· - ßèÚUEÚU ©ÂæŠØæØ ÂÌæ Ñ-àææç‹Ì·¤†Á, ãçÚUmæÚU (©žæÚUæ¹‡Ç), çÂÙ wy~yvv. ÈæðÙ-(®vxxy) w{®{®w È¤€â-(®vxxy) w{®}{{
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (ÂæÌÑ v® â âæØ z ÕÁ Ì·¤) email : pragyaabhiyan@awgp.in
â×æ¿æÚU âÂæÎÙ Ñ news@awgp.in °ß news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.6.2017
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT VIDE NO.
WPP/ 04
RENEWED 2015-2017